समत्व की साधिका

('शासनश्री' साध्वी फूलकुमारीजी का जीवन वृत्त)

साध्वी मंगलप्रभा, लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समत्व की साधिका

('शासनश्री' साध्वी फूलकुमारीजी का जीवन वृत्त)

साध्वी मंगल प्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080, 224671
ई–मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

Books are available online at
http://books.jvbharati.org

लेखिका : साध्वी मंगल प्रभा

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : जनवरी 2017

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

SAMATVA KI SADHIKA by Sadhavi Mangal Prabha ₹ 40/-

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संदेश

अर्हम्

जन्म लेना एक सामान्य बात है, किन्तु कलापूर्ण जीवन जीना विशेष बात होती है। जो व्यक्ति संयम और परोपकार से युक्त जीवन जीता है, वह स्वयं धन्य बन जाता है।

साध्वी फूलकुमारीजी (लाडनूं) हमारे धर्मसंघ की अच्छा कार्य करने वाली साध्वी थीं। करीब सात दशकों के अपने प्रलम्ब संयम पर्याय में उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा कर धर्मसंघ को अपनी सेवाएं दीं तो संघ से उन्हें सेवाएं प्राप्त भी हुई। मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। साध्वी मंगलप्रभाजी के श्रम से निष्पन्न उनके जीवनवृत से पाठकों को सत्प्रेरणा प्राप्त हो, शुभाशंसा।

माथाभांगा (बंगाल) **आचार्य महाश्रमण**

19 जनवरी 2017

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वकथ्य

''जो भी आते इस दुनियां में, वे सब इक दिन जाते हैं।
धन्य-धन्य है किन्तु वे जो, याद बसा कर जाते हैं।।''

शासन श्री साध्वी फूलकुमारीजी को मैं एक खिलते हुए उपवन के रूप में देखती हूं। जैसे उपवन विविध वृक्ष–वल्लरियों से तथा फल–फूलों से आकर्षक लगता है, वैसे ही उनका समग्र जीवन समर्पण, समता, ऋजुता, मृदुता, निस्पृहता, वचन– माधुर्यता, शालीनता, स्वाध्याय प्रियता, अप्रमत्तता, आत्मार्थिता तथा सकारात्मक–सोच आदि अनेक मानवीय व आध्यात्मिक गुणों से आपूरित था। उनके जीवन में कई बार प्रतिकूल परिस्थितियां भी आईं, पर साध्वीश्री सदैव समता की वेदी पर खड़ी रहीं। कषाय को उपशान्त रखने में साध्वीश्री दक्ष थे।

साध्वीश्री के साधनामय जीवन को मैंने बहुत निकटता से देखा और अनुभव किया, जिसे शब्दों के कैनवास में केन्द्रित करने का प्रयास किया है।

साध्वी फूलकुमारीजी तेरापंथ धर्मसंघ की वरिष्ठ साध्वियों में एक थी। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में 'वे शासनभक्त एवं संघनिष्ठ साध्वी थी'। आचार्य श्री महाप्रज्ञ की भाषा में–'वे उपशांत कषायी व विज्ञ साध्वी थी'। उन्होंने 14वें वर्ष में परम पूज्य गुरूदेव श्री तुलसी के कर–कमलों से दीक्षा ग्रहण कर साध्वी प्रमुखा झमकूंजी के निर्देशन में अपनी संयम–यात्रा प्रारम्भ की। पच्चीस वर्ष तक साध्वी श्री खूमांजी की सहयोगिनी के रूप में स्वयं के निर्माण के साथ संघ प्रभावना का कार्य किया।

वि.सं. 2037 सरदारशहर मर्यादा महोत्सव पर, बसन्त पंचमी के दिन आचार्य श्री तुलसी ने साध्वी श्री की योग्यताओं का अंकन करते हुए अग्रगण्य पद पर नियुक्त किया।

उम्र के आखिरी पड़ाव तक अग्रगण्य का सफल दायित्व निभाते हुए हजारों कि.मी. की पदयात्रा करते हुए गांव–गांव, नगर–नगर में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जैनधर्म एवं तेरापंथ का सन्देश फैलाया।

जीवन के संध्याकाल तक स्वयं की साधना के साथ–साथ सहवर्ती साध्वियों के संस्कार निर्माण हेतु जागरूक थी। 16 मार्च 2015 को नौ दिवसीय अनशन के साथ समाधिमरण का वरण किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

''हृदय मेरा हर्षित-पुलकित, तव गुण गाथा गा करके।
दीप प्रेरणा का जल उठा था, तव सन्निधि पा करके।''

मेरा अपना सौभाग्य था कि गुरुकृपा से 34 वर्ष से अधिक उस पवित्रआत्मा का निरन्तर पावन सन्निध्य मिला। वे मेरे ज्ञान–दर्शन–चरण की आराधना के आलम्बन बनीं। मुझे साध्वीश्री की ममतामयी छांव इतनी सुखद प्राप्त हुई मानों तप्त दोपहरी में किसी घने वृक्ष की छांव मिली हो। उनकी कृपा किरण ने मेरे जीवन घट में वह मातृत्व उंडेला जो जन्मदात्री मां भी नहीं दे पाती। मैं सदैव आनन का मृदुहास स्नेह व वात्सल्य पाती रही। मेरा जीवन निर्माण करने में उन्होंने जो श्रम किया वह शब्दातीत है। साध्वी श्री द्वारा प्रदत्त संस्कार हर क्षण मुझे अपने भीतर रहने हेतु जागृत करते हैं–

''माली बनकर आई सतिवर तुम, जीवन बेलि को मोड़ दिया।
पथ प्रदर्शिका बनकरके, आराधक पद से जोड़ दिया।''

कमनीय कीर्तिधर, सुरम्य श्रुतधर, रमणीय रत्नाकर, सौम्य–सुधाकर, अनन्त ऊर्जा के अक्षयकोष, आस्था के केन्द्र, महातपस्वी, परम् श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजीके वरदहस्त से ही मैं आगे बढ़ पाई हूं तथा इस कृति को लिखने का साहस कर पाई हूं। आपश्री के परम–पावन श्री चरणों में मेरी अन्तर भावना–

''यही है जिन्दगी मेरी, यही है बन्दगी मेरी।
कि तेरा नाम आए और, गर्दन झुक जाए मेरी।।''

अध्यात्म मंजुषा, पथ प्रदर्शिका, कुशल संचालिका, वात्सल्य प्रदात्री, मातृहृदया महाश्रमणीवरा के कृपाभाव को मैं शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूं। जिनका समग्र जीवन मधुरता का आगार है। संघ महानिदेशिकाजी के गुण मुक्ताओं को शब्द सूत्र में पिरोने का प्रयास वैसे ही प्रतीत होता है जैसे तेजपुंज प्रकाश के आगे नन्हा सा दीपक रखा हो।

''कल्पनाओं को शक्ल दिया तुमने, मेरे जीवन को संबल दिया तुमने।
जिन्दगी के घने अन्धेरे को, रोशनी में बदल दिया तुमने।।''

साध्वी श्रेष्ठा की पुनीत प्रेरणा से ही मैंने कुछ लिखने का प्रयास किया है। आपश्री की कृपादृष्टि की सदैव अराधना करती रहूं, यही मेरी अन्तर अभीप्सा है।

सम्माननीया मुख्यनियोजिकाजी, जो गृहस्थ जीवन से ही मेरी प्रेरक रही हैं। उनकी प्रेरणा भी मेरे साथ है। उनके प्रति मेरी यही आशंसा है कि सदैव मेरा मार्ग प्रशस्त करते रहें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैं तहेदिल से आभारी हूं 'शासन गौरव' साध्वीश्री राजीमतीजी, 'शासनश्री' साध्वीश्री पानकुमारीजी (प्रथम), साध्वीश्री कल्पलताजी तथा 'शासनश्री' साध्वीश्री जिनप्रभाजी व साध्वीश्री शुभ्रयशाजी की। साहित्य समिति ने कृति का परिष्कार कर इसे पठनीय बनाया। बहुमूल्य सुझावों से इसमें सौष्ठव का संचार हुआ।

साध्वीश्री समप्रभाजी का आत्मीय भाव सदैव मेरे साथ रहा है। जिनमें कर्मजा शक्ति, सेवाशक्ति, ग्रहणशक्ति तीनों का समन्वय है। इस कृति को सजाने–संवारने में इनका श्रम मुखर हो रहा है।

रत्नाधिक साध्वीश्री सुमनकुमारीजी का प्रोत्साहन अत्यन्त प्रेरक रहा जिसने कृति को लिखने में गति दी एवं साध्वीश्री प्रणवप्रभाजी का सहयोग सदैव मेरे साथ रहता है।

इस कृति के प्रकाशन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश जी नाहर (जयपुर) का सहयोग सराहनीय रहा।

प्रस्तुत है– 'शासनश्री' साध्वीश्री फूलकुमारीजी की जीवन झांकी '' समत्व की साधिका'' 'शासनश्री' साध्वीश्री फूलकुमारीजी का जीवन वृत्त।

इन्ही भावनाओं के साथ–

–साध्वी मंगलप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

1.	पृष्ठभूमि	1
2.	बचपन	3
3.	वैराग्य	5
4.	गुरुकुल प्रवास	10
5.	अग्रगण्य पद व स्वतन्त्र विहार	13
6.	व्यक्तित्व व कर्तृत्व	15
7.	संस्मरणों के आलोक में	19
8.	यात्रा–संस्मरण	24
9.	जीवन के कुछ प्रेरक बिन्दु	35
10.	जीवन संध्या के चार वर्ष	36
11.	संथारे के अनमोल क्षण	39
12.	पूज्यवरों के प्रेरक सन्देश	46
13.	चातुर्मास तालिका	51

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पृष्ठभूमि

राजस्थान के जोधपुर संभाग का प्रख्यात नागौर जिले का एक कस्बा– लाडनूं, जो चन्देरी नाम से भी प्रख्यात है। जिसे तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों व साधु–साध्वियों का प्रमुख विहार क्षेत्र तथा तपः स्थली होने से तपोभूमि होने का गौरव प्राप्त है। आचार्यश्री भिक्षु व आचार्य श्री रायचन्द जी के तपः पूत चरणों से यह भूमि पवित्र बनी हुई है। आचार्यश्री जीतमल जी की सृजन भूमि व साधना स्थली बनने का गौरव भी इसी धरा को प्राप्त हुआ है।

लाडनूं वह तीर्थभूमि है– जहां वि.सं.1914 से वृद्ध साध्वियों का स्थिरवास है।

लाडनूं वह ऐतिहासिक भूमि है– जिसे आचार्यश्री मघवा व माणक की दीक्षाभूमि बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री डालगणी का संघ द्वारा आचार्य पद मनोनयन का मनमोहक दृश्य इसी धरा पर सृजित हुआ तो महाप्रयाण भी यहीं हुआ। अष्टामाचार्य कालूगणी का आचार्य पदाभिषेक व वर्धापना का सौभाग्य भी इसी वसुन्धरा को मिला।

लाडनूं वह प्रख्यात भूमि है– जिसे अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान गुरुदेव श्री तुलसी की जन्मभूमि, दीक्षाभूमि व कर्मभूमि बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यह वही वसुधा है– जहां तेरापंथ धर्मसंघ को सुशोभित करने वाली सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी ने खटेड़ वंश में जन्म ले गुरुदेव श्री तुलसी की सहोदरी बनने का अवसर प्राप्त किया।

यह वही धरा है– जहां बैद परिवार की लाडली कला गुरुदेव श्री तुलसी की अनुपम कृति बन साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ के साध्वी समाज को गौरवान्वित कर रही हैं।

लाडनूं की लाडली साध्वी विश्रुतविभा मुख्यनियोजिका के रूप में धर्मसंघ की सेवा कर रही है।

जैन विश्व भारती के आंचल तले जैन समाज में एक मात्र मान्य विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद तो लाडनूं का नाम अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर शिक्षा–संस्थान के रूप में महकने लगा है।

यही वह ऐतिहासिक धरा है जिसे 21 फरवरी 2011 को आचार्य श्री महाश्रमण के द्वारा ''तेरापंथ की राजधानी'' घोषित की गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इस धरा पर जन्में अनेक भव्यात्माओं ने तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होकर अध्यात्म साधना से अपने आपको भावित किया।

लाडनूं नगर में बैंगानी परिवार का अपना एक अलग ही वर्चस्व रहा है। स्टेशन रोड़ स्थित ख्यातनामा हमीरमलजी बैंगानी के पांच सन्ताने हुईं– तीन पुत्र व दो पुत्रियां।

तीनों भाईयों का शुरू से ही कोलकाता महानगरी में व्यापार था। उनमें सबसे छोटे भाई भूरामलजी प्रारम्भ से ही दलाली का काम करते थे। लाडनूं की दूसरी पट्टी में श्री भैरूदान जी बरमेचा की सुपुत्री मनोहरी के साथ वे परिणय सूत्र में बंधे। नाम के अनुरूप मनोहर गुणों से संपन्न थी मनोहरी। दोनों पति–पत्नी शांत, सहज व धार्मिक प्रकृति के थे। भूरामलजी की दैनिक चर्या का अंग था– प्रतिदिन सामायिक व हर चतुर्दशी का उपवास। आपका व्यक्तित्व सुघड़ था गायन कला अच्छी थी। भूरामलजी के दोनों ज्येष्ठ भाईयों के सन्तान नहीं थी पर भूरामलजी के आठ सन्तानें थीं। पांच पुत्रियां व तीन पुत्र– भंवरीदेवी, माणक, मघी, फूल, सन्तोष तथा पूनमचन्दजी, मूलचंदजी, धनराजजी। जिनमें छठे स्थान पर थीं बालिका ''फूल''।

वि.सं. 1986 मीगसर शुक्ला पंचमी को मनोहरी देवी की कुक्षि से बालिका का जन्म हुआ। पारिवारिक रीति–रस्म के अनुसार बालिका का नाम दिया– ''फूल''।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बचपन

जैसा नाम, वैसी ही सुकोमल, सुन्दर व आकर्षक चेहरे से फूल पूरे परिवार की मनमोहक बन गई। गौरवर्ण, सौम्यमुद्रा, चमकती आंखें, व तेजस्वी बदन प्रतिदिन चन्द्रमा की तरह बढ़ने लगा। फूलकी बड़ी भगिनी माणक बताती थी– ''मुझे फूल इतनी प्यारी लगती कि मैं इसे गोदी से नीचे उतारना भी नहीं चाहती। नए–नए कपड़े पहनाना, सजाकर रखना मुझे बहुत अच्छा लगता। यह रोती तो मैं सहन नहीं कर सकती थी।''

बचपन में बाल सुलभ चंचलता का होना सहज स्वाभाविक है। बालिका भी चंचल थी। बड़े पिताश्री जंवरीमलजी घेवरी देवी के सन्तान न होने की वजह से वे फूल को अपने पास ही रखते। बालिका नखरेल थी। राजस्थान का परिवेश रेशमी ओढ़ना, लहंगा, बोर तथा लगभग 20–25 तोला सोना नियमित पहनती थीं। कभी–कभी 100 तोला सोना भी पहन लेती।

धार्मिक संस्कार –

बैंगानी परिवार शुरू से ही संस्कार संपन्न परिवार है। उन्होंने अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दिए। संस्कारों के दर्पण में व्यक्ति का व्यक्तित्व स्वतः ही प्रतिबिम्बित हो उठता है। संस्कार अमूल्य धरोहर है। संस्कारों की संपदा से जीवन सुन्दर व आकर्षक बन निखर उठता है। इसी बैंगानी परिवार के युवा दम्पति श्री हुलासमलजी ने माली देवी के साथ दीक्षा लेकर कीर्तिमान स्थापित किया। वह युग था जिस समय यौवन की दहलीज पर चरण रखते ही दीक्षा लेने वाले विरले होते थे। तपस्वी मुनि श्री हुलासमलजी स्वामी संयमी जीवन–चर्या में इतने सजग थे कि पूरे साधना काल में एक बार भी मिच्छामि दुक्कड़ं नहीं लिया। ऐसा सुना है।

बालिका फूल छोटी उम्र में भी समझदार व विवेकशील थीं। 6–7 वर्ष की उम्र में ही कहने लगी– 'मुझे दीक्षा लेनी है।'' ''घर वाले कहते– तूं इतनी नखरेल क्या दीक्षा लेगी? बड़े पिताजी कहते– फूल! यदि तू दीक्षा लेगी तो वापस घर आएगी। योग से एक दिन घर में हस्तरेखा विशेषज्ञ आया। सब अपने–अपने हाथ दिखा रहे थे। घरवालों ने फूल का हाथ दिखाते हुए पूछा– ''इसका हाथ कैसा है?'' ज्योतिष ने गहराई से हाथ देखा और बताया–'' यह बालिका बड़ी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेज किस्मत वाली है। इसको संपन्न परिवार व सुन्दर पति मिलेगा। यह गाड़ियों में घूमेगी। शादी का नाम सुनते ही बाल मानस उद्वेलित हो उठा, चेहरे का रंग बदल गया। पूछा– मेरी कौन सी रेखा है, जो शादी की सूचक है। ज्योतिषी ने कहा– ये जो दो रेखाएं हैं, वह जोड़े की सूचक हैं। फूल ने उसी समय संकल्प किया– मुझे मेरी शादी की रेखा को मिटाना है। संकल्प शक्ति का चमत्कार कुछ ही समय में स्वतः दो रेखा की एक रेखा हो गई।

मां मनोहरी के मन में कई बार आता मेरी इतनी सन्तानें हैं उनमें यदि एक भी दीक्षा ले तो मेरी कुक्षि धन्य बन जाए। मां की भावना को मूर्त्तरूप देने तत्पर हो रही थी– लाडली फूल।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वैराग्य

आठ वर्ष की बालिका फूल ने दृढ़ निश्चय कर लिया मुझे दीक्षा ही लेनी है। वैराग्य की परिपक्वता में दो घटनाएं निमित्त बनी–:

1. फूल की बड़ी बहिन माणक, जिसकी शादी चाड़वास के प्रतिष्ठित श्रावक श्री पूनमचन्द जी चौरड़िया के सुपुत्र सागरमलजी के साथ हुई थी। एक दिन बच्चे छत पर खेल रहे थे। अचानक घर में कोहराम मच गया। जोर–जोर से रोने की आवाज सुनाई देने लगी। बच्चे घबरा गए उनके साथ फूल भी थी। फूल ने पूछा– ये सब क्यों रो रहे हैं? किसी ने बताया– तुम्हारे दूसरे नम्बर के बनेइसा सागरमलजी की अचानक मृत्यु हो गई है, जिनकी उम्र मात्र 22 वर्ष की थी। सुनते ही हृदय पर गहरी चोट लगी। कारण–माणक बाई से फूल का अत्यधिक मोह था।

2. दूसरी घटना– पड़ोसी घर की लड़की गुलाब ससुराल जाती तो जोर–जोर से रोती। फूल ने मां से पूछा– यह रोती क्यों है? मां ने जिज्ञासा को समाहित करते हुए कहा– यह ससुराल जा रही है। उसी समय फूल संकल्पित हो जाती है– ''मुझे ससुराल जाना ही नहीं है, दीक्षा ही लेनी है।''

बस इन्हीं घटनाओं के साथ ही फूल का वैराग्य परिपक्व हो गया। बढ़ती हुई दीक्षा की भावना को देख बड़े पिताश्री पूछते– क्या तुम पैदल चल पाओगी? लूंचन करवा लोगी? मांगकर खा लोगी? फूल इन प्रश्नों का छोटा सा सधा हुआ उत्तर देती– पिताश्री! मैं साधु बनकर सबकर लूंगी। पुनः पूछते तुम्हें तो नाश्ते में रोज नई चीज व दूध चाहिए, दोपहरी में मावे के पेड़े चाहिए। साधु बनने के बाद कहां से मिलेगें। फूल कहती– मैं नाश्ता व दोपहरी करूंगी ही नहीं। सुनते ही पिताजी भावविभोर बन जाते। कुछ समय पश्चात् आचार्यश्री तुलसी लाडनूं पधारे। बालिका ने अपनी मां से कहा– मां मेरी दीक्षा की अर्ज करो। मां बेटी को साथ ले पूज्य गुरुदेव श्री के उपपात में पहुंची। गुरुदेव ने फरमाया– क्या बात है मनोहरी! कैसे आई हो! (ज्ञात रहे मनोहरी का पीहर व गुरुदेव श्री का जन्म स्थान पास–पास होने से दोनों बचपन में साथ–साथ खेला करते थे। अतः गुरुदेव आपको मनोहरी ही कहते थे।) मनोहरी– अन्नदाता! फूल की भावना दीक्षा लेने की है, अतः अर्ज करने आई हूं। गुरुदेव फूल की ओर देखते हुए– अभी तो यह बहुत छोटी लग रही है। थोड़ी बड़ी होने दो।

फूल अनमने मन से मां के साथ घर आ गई। वैराग्य दिन–प्रतिदिन वर्धमान होता जा रहा था। मां का दिल खुशी से सरोबार हो रहा था क्योंकि उनकी इच्छा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को फूल साकार कर रही थी, पर क्रूर–काल ने असमय में ही अचानक मनोहरी देवी को अपनी गोद में उठा लिया। बाल मानस फूल पर गहरा वज्राघात लगा। संसार की नश्वरता का बोध पाठ और गहराई से मिल गया। मां की मृत्यु के पश्चात् बड़े पिताश्री जंवरीमल जी व उनकी पत्नी ने बच्चों के पालन में बखूबी से अपना दायित्व निभाया। भूरामलजी का घर सेवा केन्द्र से काफी दूरी पर था, फिर भी फूल नियमित साध्वियों के दर्शनार्थ जाती व धार्मिक चीजें कंठस्थ करती। सबसे ज्यादा थोकड़े कंठस्थ किया करती। लाडनूं में उस समय चार वैरागी थे। उनमें से एक है– श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर श्री सुमेरमल जी स्वामी। वैरागी सुमेरमल व फूल दोनों एक साथ चितारते थे।

दीक्षा की अर्ज व आदेश-

अभिभावकों की कसौटी पर खरी उतरने के बाद बालिका ने अपने पिताजी को दीक्षा की अर्ज हेतु गुरुदेव के दर्शनार्थ चलने को कहा। पिताजी बोले– फूल! अभी तू छोटी है। लोग कहेगें मां नहीं है, इसलिए दीक्षा दे दी। फूल तपाक से बोली– मैं अब छोटी नहीं हूं। समय का एक पल का भी भरोसा नहीं है अतः मेरी जल्दी दीक्षा की अर्ज करें। इससे पूर्व जब–जब अवसर आता स्वयं अन्य वैरागिनों के साथ श्री चरणों में अर्ज करती रहतीं।

इन्हीं भावनाओं के साथ फूल अपने बड़े पिताजी व मातुश्री के साथ श्री डूंगरगढ़ गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शनार्थ गई। फूल ने गुरुदेव श्री के उपपात में जाकर श्री चरणों में निवेदन किया– अन्नदाता! मुझे दीक्षा का आदेश फरमाने की कृपा कराएं। पास में ही मंत्री मुनि श्री मगनलालजी स्वामी विराज रहे थे। उन्होंने पूछा– तुम्हें क्या–क्या कंठस्थ है? फूल–भक्तामर, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, पाना की चरचा, इक्कीस द्वार, बावन बोल, संजया नियंठा, गमा आदि। मंत्री मुनि– अभी तुम छोटी हो। निश्छल हृदया फूल ने पंजो पर खड़े होते हुए कहा– देखिए, मैं इतनी बड़ी हो गई हूं। बालिका की ऋजुता पर सभी मुस्कुराने लगे। बार–बार निवेदन करने पर मंत्रीमुनि ने पूज्य गुरुदेव श्री से निवेदन किया– अब यह कुछ बड़ी हो गई है। लगती भी ठीक है, कृपा कर आप इसे प्रतिक्रमण का आदेश फरमाएं।

मंत्रीमुनिश्री के निवेदन पर पूज्य गुरुदेव ने फूल को प्रतिक्रमण सीखने का आदेश फरमा दिया। फूल खुश मन अपने पिताजी के साथ लाडनूं आ गई। प्रतिभा तीव्र होने की वजह कुछ ही दिनों में साधु प्रतिक्रमण कंठस्थ कर पुनः श्री चरणों में दीक्षा का आदेश लेने पहुंच गई। क्यों कि फूल उस स्वर्णिम पल का इन्तजार कर रही थीं जिस दिन दीक्षा स्वीकार कर साध्वी बनेगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुदेव श्री तुलसी ने वि.सं. 2000 गंगाशहर चातुर्मास में दीक्षा का आदेश फरमा दिया। फूल का बाल मानस अपनी मनोभावना को साकार होते देख खुशी से झूम उठा।

पारिवारिक जन वैरागिन को लेकर लाडनूं आ गए। बरनोले निकाले गए। मंगलगीत गाए जाने लगे। सब कुछ होते हुए भी एक रिक्तता खटकती– काश! इस वक्त यदि मां मौजूद होती। खैर नियति को यही मान्य था, ऐसा मान मन में सन्तोष कर लेती।

दीक्षा-

वि.सं. 2000 गंगाशहर चातुर्मास में गुरुदेव श्री ने भाद्रव व कार्तिक दो महीनों में दीक्षा–महोत्सव की घोषणा की। फूल के अभी तक चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम नहीं हुआ था। अचानक शरीर में खुजली ने उग्र रूप धारण कर लिया परिणाम स्वरूप भाद्रव महीने में दीक्षा नहीं हो सकी। खुजली से निजात पाने के बाद पुनः गुरुदेव के दर्शन किए। सारी स्थिति की अवगति लेते हुए परम पूज्य गुरुदेव श्री ने कार्तिक शुक्ला नवमी, सन् 1943, 4 नवम्बर को दीक्षा की घोषणा की।

आखिर दीक्षा का वह मंगल प्रभात आ गया, जिस दिन गंगाशहर के चोपड़ा–चौक में 15 दीक्षाएं होने जा रही थी। उमड़ते भावों से सभी दीक्षार्थी प्रवचन पंडाल में पहुंच रहे थे। फूल भी पहुंची। एक साथ इतने छोटे–छोटे दीक्षार्थियों को देख जन–सैलाब भावाभिभूत हो रहा था।

श्रद्धेय गुरुदेव श्री ने मंत्रोच्चारण के साथ दीक्षा–संस्कार संपन्न किया। तत्कालीन साध्वी प्रमुखा श्री झमकूंजी ने आपका केश लूंचन किया। अब बालिका फूल साध्वी फूल बन गई। पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की कृपा से 14वें वर्ष में फूल जन–जन के लिए वन्दनीय बन गई। साध्वी प्रमुखाश्री झमकूंजी के संरक्षण में संयमी–जीवन का सम्पोषण होने लगा। ज्ञान–दर्शन–चारित्र की सतत आराधना करती हुई नवदीक्षिता साध्वी फूल कुमारी दैनन्दिन विकास के पथ पर अग्रसर होने लगी।

बहिर्विहार

मर्यादोत्सव के पावन अवसर पर जब नवदीक्षिता साध्वियों को वंदना करवाई गई तब सबके गमगीन चेहरे व आंखों से बहती हुई अश्रुधारा को देख बाल हृदया साध्वी फूल ने पूछा– क्या हुआ, सब उदास क्यों हो रही हो ? सह दीक्षिता साध्वियों ने कहा– अब हमारा गुरुकुलवास में रहना नहीं होगा, क्योंकि हमें

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बहिर्विहार में भेजा जा रहा है। अच्छा तब तो मैं गुरुकुलवास का खूब आनन्द उठाऊंगी। साध्वियों ने कहा– अरे, तुम्हें भी तो भेज दिया है।। प्रतिप्रश्न– कब? आज साध्वी श्री खूमाांजी को वन्दना तो करवाई थी। बाल

साध्वी ने पूछा– क्या वंदना करवाने से ही बहिर्विहार में भेजा जाता है? यह थी मन की निश्छलता।

क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी श्री खूमांजी के उपपात में साध्वी फूल साधनामय जीवन को गति देने लगी। साध्वी श्री खूमांजी के साथ साध्वी चूनांजी–लाडनूं नवदीक्षितों में संस्कार भरने में माहिर थी। बाल साध्वी उनके द्वारा साध्वाचार के संस्कार अर्जित कर रही थीं तो, साध्वी मोहनांजी–लाडनूं, साध्वीपान कुमारी जी– डूंगरगढ़ भी संघीय संस्कार निर्माण के गुर सीखा रहे थे। करूणा व वात्सल्य के साये में साध्वी जीवन पल्लिवत एवं पुष्पित हो रहा था।

साध्वी श्री खूमांजी वो साध्वी थीं, जिन्होंने अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी की मां, मातुश्री छोगांजी की 36 वर्ष तक अनवरत सेवा की। बीदासर जैसे क्षेत्र में जिन्होंने अनूठी छाप जमाई। कालूगणी राज ने युवाचार्य श्री तुलसी को कहा– ''तुलसी! खूमांजी को सात साध्वियों की तथा लाडनूं चाकरी की बक्शीष करना।

बहिर्विहार में प्रथम चातुर्मास भिवानी कर जब मर्यादा–महोत्सव पर पूज्यप्रवर के दर्शन किए तब गुरुदेव ने साध्वी खूमांजी को कहा– ''नानकी! थोड़ी लम्बी हो गई है।'' इस प्रकार गुरुदेव श्री तुलसी का अपरिमेय वात्सल्य समय–समय पर मिलता रहता था।

गुरुदेव श्री तुलसी ने पट्टासीन होते ही साध्वी समाज की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। साध्वी प्रमुखा श्री लाडांजी का लक्ष्य था– जो बाल साध्वियां प्रतिभा संपन्न हों, उन्हें गुरुकुलवास में रखकर अध्ययन करवाना। साध्वी प्रमुखा श्री विज्ञा विचक्षण थी। वे नब्ज देख पहचान लेती, किस साध्वी का कैसे निर्माण करना। साध्वियों की अर्हता के आधार पर उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देतीं।

प्रमुखा श्री की पारखी नजरें साध्वी फूल पर टिकी। राज में रख पढ़ाना चाहा पर,साध्वी खूमांजी का चातुर्मास जोधपुर होने के कारण जोधपुर देखने का आकर्षण था। अतः राज में रहने की मना कर दी। वि.सं. 2002 का चातुर्मास जोधपुर कर पुनः मर्यादा–महोत्सव पर गुरुदेव के दर्शन किए तब पूज्य प्रवर ने फरमाया– ''इस बार नानकी ठीक लग रही है।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी प्रमुखा श्री ने पुनः अध्ययन की प्रेरणा देते हुए राज में रहने के लिए फरमाया, पर साध्वी फूल का मानस साध्वी श्री खूमांजी को छोड़ने का नहीं बन रहा था अतः मौन रहे। एक दिन साध्वी विजयश्री जी–रतनगढ़ ने स्नेहासिक्त शब्दों से समझाते हुए कहा– देखो, अभी तुम छोटी हो, समझती नहीं हो। अभी तो सबको अच्छी लगती हो पर बड़ी होने पर पता चलेगा, पढ़ाई का क्या मूल्य होता है। पढ़े बिना कोई नहीं पूछेगा। अभी तुम्हें यहां रहना अच्छा नहीं लगता, रहने के बाद यहां से जाना अच्छा नहीं लगेगा। आज एकान्त में चिन्तन करके कल मुझे जवाब देना कि तुम्हें राज में रहना है या नहीं? खूब प्रयास के बाद साध्वीश्री का मन बदला और साध्वी खूमांजी से निवेदन किया– '' मैं अध्ययन हेतु राज में रह जाऊंगी''। साध्वी खूमांजी तो चाहते थे कि फूलकंवर गुरुदेव श्री के उपपात में ज्ञानार्जन करें। आज अचानक उनकी भावना को सुन बहुत प्रसन्नता हुई। साध्वी प्रमुखा श्री लाडांजी को निवेदन कर दिया– फूलकंवर राज में अध्ययन हेतु रहने के लिए तैयार हैं। दूसरे दिन साध्वी प्रमुखा श्री ने यही बात गुरुदेव को निवेदित की। तत्काल गुरुकुलवास में रहने की स्वीकृति प्राप्त हो गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुकुल प्रवास

संयमरत्न की प्राप्ति तो सौभाग्य का सूचक है ही पर, गुरुकुलवास की प्राप्ति वस्तुतः अनंत जन्मों के संचित पुण्योदय का ही प्रतीक है। साध्वी श्री को वि.सं. 2003 से 2015 तक गुरुकुलवास में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अध्ययन का क्रम शुरू हुआ। साध्वी समाज की प्रतिभाओं को निखारने, संवारने में आचार्य श्री तुलसी के साथ–साथ साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी का अथक श्रम रहा।

वि.सं.2003 राजगढ़ चातुर्मास से साध्वी श्री के जीवन में एक प्रकार से शिक्षा का क्रम संस्कृत भाषा से शुरू हुआ। उस समय साध्वी समाज में अध्ययन की होड़ लगी रहती थी। पूज्य प्रवर स्वयं अध्यापन करवाने हेतु पूरा श्रम करवाते। साथ ही एक–एक रत्नाधिक साध्वी को 4–5 साध्वियों की जिम्मेदारी दी जाती, ताकि कंठस्थ ज्ञान का शुद्ध उच्चारण व पढ़े हुए ज्ञान की पुनरावृत्ति हो सकें। इसी क्रम में साध्वी फूलकुमारी ने योग्य, योग्यतर व योग्यतम सप्तवर्षीय कोर्स उत्तीर्ण किया।

गीत निर्माण का बीजारोपण

साध्वी फूलकुमारी जी का सर्वाधिक प्रिय विषय था– संगीत। बचपन से ही गाना अच्छा लगता था। एक बार प्रसंगवश साध्वी श्री ने फरमाया जब मैं 5–6 वर्ष की थी तो एक दिन बड़ी बहिन माणक ने पूछा– फूल! तनै सबस्यूं चोखो कांई लागै? मैं बोली– बाई मनै राग सबस्यूं चोखी लागै। साध्वी श्री की संगीत रचना कैसे प्रारम्भ हुई इसका जिक्र मैं उनके शब्दों में ही करना चाहूंगी–

वि.सं. 2004 रतनगढ़ का प्रसंग है– ''संगीत सम्राट गुरुदेव श्री तुलसी के पट्टोत्सव पर प्रायः साधु–साध्वियां बोलने की तैयारी कर रहे थे। कोई संस्कृत में, कोई प्राकृत में, कोई हिंदी में तो कोई राजस्थानी में। उन्हें देख मेरे भोले मानस में उत्साह जगा– मैं भी गीतिका बनाऊं। पर, इस विधा से सर्वथा अनजान व अपरिचित थी। फिर भी गीत बनाने की धुन सिर पर सवार थी। फलतः टूटे–फूटे शब्दों में एक साध्वी को साथ लेकर गीत बनाया। पट्टोत्सव के सुअवसर पर उस स्वरचित गीत की प्रस्तुति दी। गीत को सुनकर प्रेरणास्रोत पूज्यप्रवर ने साध्वी प्रमुखा श्री लाडाजी से कहा– ''इसने प्रथम बार में ही गीत अच्छा बनाया है और गाने का तरीका भी ठीक है, आलाप भी अच्छा करती है।''

पूज्यप्रवर के ये अनमोल बोल मेरे बालमानस पर अंकित हो गए।''

बस, यहीं से गीत लिखने व गाने का हौसला साध्वी श्री फूलकुमारी जी का बुलन्द हो गया। हर पर्व पर गीत रचना करने लगीं। सैंकड़ों गीत व 25 व्याख्यान की रचना की। संस्कृत में भी गीत व श्लोक बनाएं। उम्र की ढ़लती वय में भी तुलसी–जन्म शताब्दी अवसर पर तेरह गीत लिखें। गला इतना मधुर था– एक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिन साध्वी जयश्री जी ने साध्वियों की ओर इंगित करते हुए कहा– ताल छापर में हम साध्वियां स्थंडिल भूमि प्रायः साथ जाती थीं। एक दिन साध्वी फूलकुमारी जी ने हमारे कहने से ''कलाशीकल'' आलाप में गाना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में हिरण दौड़कर आ गए। तेरापंथ धर्मसंघ में कोकिल कंठी मानी जाती थीं। साध्वी श्री द्वारा रचित पुस्तक ''फूलों का पराग'' तथा ''उठ जाग रे मुसाफिर'' लोकप्रिय बनीं। जब भी गाती श्रोता भाव–विभोर बन जाते। 85 वर्ष की उम्र में भी स्वर माधुर्य व गीत रचना अति प्रभावी थी। सन् 2014 मर्यादा–महोत्सव के सुअवसर पर मातृहृदया महाश्रमणीजी के ''चयन–दिवस'' पर स्वरचित गीत सुनाया, तब साध्वीवरा ने फरमाया– ''साध्वी फूलकुमारी जी अवस्था वृद्ध है, पर गला आज भी वैसा ही है।''

तत्त्वज्ञान का प्रारम्भ

साध्वी फूलकुमारी जी की तत्त्वज्ञान में अच्छी रूचि थी। एक बार तत्त्वज्ञ श्रावक जयचन्द लाल जी कोठारी साध्वियों को पढ़ा रहे थे। उन्होंने प्रश्न पूछे। साध्वीश्री ने कई प्रश्नों के उत्तर गलत दिए। जयचन्दलाल जी ने कहा– ''साध्वीजी! यह क्या किया? आपने तो मेरा पढ़ा–पढ़ाया, ''काता पीन्या कपास कर दिया।''

फूलकुमारी जी के जिज्ञासु दिल को यह बात गहरी चोट कर गयी। उसी समय मन ही मन संकल्प किया– चाहे कितनी ही मेहनत क्यों न करनी पड़े पर अब मुझे कभी भी ''काता पीन्या कपास नहीं करना है''।

उसी दिन से तत्त्वज्ञान के प्रति गहरा रूझान हो गया और कुछ समय पश्चात् संघ में तत्त्वज्ञा साध्वियों की प्रथम पंक्ति में नाम अंकित हो गया। इसीलिए किसी कवि ने ठीक ही लिखा है–

''कर्मशील मानव के पथ का, हर पत्थर साधक बनता है।
दीवारें भी राह दिखाती, मानव जब आगे बढ़ता है।।''

कई बार प्रसंगवश गुरुदेव श्री तत्त्वचर्चा सम्बंधित प्रश्न पूछवाते तो सही उत्तर देकर साध्वी श्री पुरस्कृत भी होते थे।

बारह वर्ष तक अनवरत गुरुकुलवास की दुर्लभतम सन्निधि की प्राप्ति के बाद गुरुदेव श्री ने पुनः साध्वीश्री खूमांजी के पास भेज दिया। साध्वी श्री खूमांजी की फूलकंवर पर अनहद कृपा थी। 25 वर्ष तक निरन्तर साध्वी श्री खूमांजी की सन्निधि को प्राप्त करती हुई संयम यात्रा को आनंद के साथ आगे बढ़ाती रहीं। इस दौरान क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी श्री खूमांजी का निरन्तर वात्सलय मिलता रहा तो सहवर्ती रत्नाधिका साध्वी चूनांजी, पानकुमारीजी, (प्रथम) मोहनांजी व राजकुमारी जी का भी स्नेह बरसता रहा। अवम साध्वी रत्नवती जी व अनोपकंवर जी का भी हार्दिक सहयोग प्राप्त था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी श्री पानकुमारी जी (प्रथम) व फूलकुमारी जी का आत्मीय भाव बेजोड़ था। जब–जब साध्वीद्वय का साथ रहने का अवसर आता हम सभी साध्वियां अपनी आंखों से देखते कि दोनों में कितना अपनत्व था। साध्वी पान का वात्सल्य व साध्वी फूल का समर्पण भाव हम सबके लिए प्रेरणादायी बनता था। साध्वी पानकुमारी जी कई बार कहते– 'साध्वी फूलकंवर! इतनी विदुषी होने के बावजूद भी कितनी विनीत, समर्पित व गंभीर साध्वी हैं। आज तक मैंने कभी इनमें आग्रह भाव नहीं देखा।'' जीवन के संध्याकाल में भी दोनों का आत्मीय भाव उजागर रहा। साध्वी फूलकुमारी जी के संथारे के दौरान साध्वी पानकुमारी जी ने फरमाया– ''फूलकंवरजी! हम पच्चीस वर्ष तक सगी बहनों की तरह सौहार्द–विनय–वात्सल्य से रहें। वे क्षण आज भी स्मृति में हैं। तुम्हारे जीवन का हर पहलू उत्तम सर्वोत्तम रहा। जिसकी समय–समय पर याद आती रहती है। तुम मेरे बाद आयी और पहले ही जाने की तैयारी कर ली। तुम्हारा यह संथारा साध्वी श्री खूमांजी के संस्कारों की अमूल्य धरोहर है। साध्वी खूमांजी की सभी सहयोगी साध्वियों ने संथारा किया। हम पास में होते तो संथारे में जरूर आते। तन से भले दूर हैं पर मन संथारे में सहभागी है।''

वस्तुतः ''पान–फूल'' की जोड़ी हम सहवर्ती साध्वियों के लिए अनुकरणीय बन गई।

साध्वी श्री खूमांजी के उपपात में साध्वी श्री ने स्वयं की साधना के साथ–साथ अन्यान्य दायित्वों को भी बखूबी से निभाया। सुजानगढ़, छापर, रतनगढ़, विशेष राजलदेसर का श्रावक–समाज आज भी उस प्रवास को तथा उस दौरान मिले संस्कारों को याद करते हैं।

वि.सं. 2035 साध्वी श्री खूमांजी के देवलोक गमन के पश्चात् साध्वी श्री पानकुमारी जी को अग्रगामी बनाया गया। उस समय साध्वी प्रमुखा श्री ने फूलकुमारी से कहा– गुरुदेव श्री ने आपको तीन विकल्प दिलवाएं हैं। आप अपनी इच्छा मुझे बता दें–

1. आपकी इच्छा हो तो आप गुरुकुलवास में रह सकती हैं।

2. आपकी इच्छा हो तो आप लाडनूं शिक्षा केन्द्र में रह सकती हैं।

3. गुरुदेव श्री की मर्जी आपको अग्रगामी बनाने की भी है।

साध्वी श्री की हार्दिक तमन्ना– एक साल साध्वी श्री पानकुमारीजी के साथ रहने की थी। साध्वी प्रमुखा श्री ने मनोभावना गुरुदेव को निवेदित की। भावना को साकार रूप मिला। गुरु आज्ञा को प्राप्त कर एक साल साध्वी पानकुमारी जी के साथ रहीं। एक साल बाद सरदारशहर मर्यादा–महोत्सव पर गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शन किए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अग्रगण्य पद व स्वतन्त्र विहार

''गुरु की करूणा से मिलता संयम सुखमय,
गुरु के चरणों में रहता साधक निर्भय,
गुरु की सन्निधि में दुविधा मिटती सारी,
गुरु का पथ-दर्शन पग-पग मंगलकारी।।''

गुरुकृपा से साध्वीश्री की योग्यताओं एवं क्षमताओं का प्रस्फुटन शैशव की धरती पर ही होने लगा था। यौवन तक पहुंचते–पहुंचते वह और अधिक विकस्वर हो उठा। आचारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, व आज्ञानिष्ठा आदि विशेषताओं की ओर दृष्टिपात करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी ने साध्वी श्री फूलकुमारी को वि.सं. 2037, सन् 1980 सरदार शहर मर्यादोत्सव के पुनीत अवसर पर बसन्त पंचमी के शुभ दिन अग्रगण्या बनाया। माघ शुक्ला सप्तमी के दिन सुदूर प्रान्त बिहार–बंगाल की ओर जाने का आदेश देते हुए फरमाया– ''साध्वी फूलकुमारी जी बहुत वर्षों तक साध्वी खूमांजी के साथ राजस्थान में रहीं। अब इन्हें सुदूर प्रदेश की यात्रा पर भेज रहा हूं। ये हमारे धर्मसंघ की प्रबुद्ध व गंभीर सोच वाली साध्वी हैं।'' आचार्यप्रवर ने फरमाया– विहार जल्दी करना है, मुहुर्त्त देख लेना। साध्वी फूलकुमारी जी व साध्वी यशोधराजी को साथ विहार करना था। दोनों ने निवेदन किया– आचार्यश्री जब फरमायेगें तभी विहार कर देगें। आचार्यश्री ने दो क्षण चिन्तन कर फरमाया– ''अणपूछ्यो मोहरत भलो क तेरस क तीज''। गुरुवाणी से निसृत मुहुर्त्त पर माघ शुक्ला तेरस के दिन दोनों ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ ''तिन्नाणं तारण्याणं'' का लक्ष्य लेकर पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के मुखारबिन्द से मंगलपाठ श्रवण कर, साध्वी प्रमुखा श्री जी का मंगल आशीर्वाद लेकर एवं पूरे धर्मसंघ की मंगलभावनाओं के साथ सरदारशहर से बिहार–बंगाल की ओर विहार कर दिया।

जैन मुनि की पदयात्रा भौतिकता के अन्धकार में दिग्भ्रान्त व्यक्ति को अध्यात्म का आलोक प्रदान करती है। उनकी यात्रा केवल क्षेत्रों का अवलोकन ही नहीं अपितु व्यसनों व बुराइयों की गिरफ्त में जकड़े हुए व्यक्तियों को सदाचार व नैतिकता के पथ पर चलने की प्रेरणा भी देती हैं।

साध्वी फूलकुमारी जी इस कला में माहिर थीं। साध्वी श्री द्रुत गति से विहार करते हुए राजगिरी पहुंचें इस लम्बी यात्रा में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। खट्टे–मीठे अनेक तरह के अनुभव हुए।

''सफर की कठिन घड़ियों में, गुरु ही त्राण होते हैं।
हृदय की अंध-गलियों में, गुरु ही प्राण होते हैं।।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

राजगिरी से साध्वी फूलकुमारी जी गुलाबबाग की ओर व साध्वी यशोधराजी ने कलकत्ता की ओर विहार किया। गुरुदेव श्री ने गुलाबबाग, खुश्कीबाग, मधुवनी, भट्टा बाजार, व पूर्णिया– पांच स्थानों पर चातुर्मास करने का आदेश फरमाया। पूज्य गुरुदेव श्री की अनुकम्पा से गुलाबबाग में तपस्याएं हुईं तथा नए–नए कार्यक्रमों एवं जप तप आदि उपक्रमों द्वारा नई जागृति का संचार हुआ। सैंकड़ों भाई–बहिनों ने पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, अष्टकम्, तेरापंथ प्रबोध, थोकड़े, गीतिकाएं आदि कंठस्थ किएं। बच्चों से लेकर युवकों, बुजुर्गों तक सबको बांधकर रखने की अनुपम क्षमता थी। उपासना में आने वालों को कुछ नया ज्ञान देने का प्रयास करती थीं।

एक एक घर व एक–एक व्यक्ति की आंतरिक प्रतिलेखना करना वे स्वयं का महत्त्वपूर्ण दायित्व मानती थीं। इस दृष्टि से सामूहिक गोष्ठियां एवं पारिवारिक सार–संभाल के क्रम चलते थे। संगठन को सक्रिय व मजबूत बनाने का विशेष प्रयास था। जहां कहीं भी विग्रह की थोड़ी सी भी भनक कानों में पड़ती तो साध्वीश्री उसे मिटाने का प्रयास करवातें। वाणी में सहज मृदुता थी, जिसकी वजह से क्रोधी से क्रोधी भी झुक जाता था।

यात्रा में प्रवचन के दौरान देव–गुरु–धर्म के साथ–साथ मानव जाति के उत्थान हेतु अणुव्रत– आन्दोलन व प्रेक्षाध्यान के बारे में भी बताया जाता। साधु जीवन की चर्या का भी प्रासंगिक रूप से उल्लेख किया जाता है। जहां भी जाते प्रवचन के बाद दक्षिणा के लिए कहा जाता। दक्षिणा का नाम सुनते ही लोग एक दूसरे का मुंह देखने लग जाते। साध्वी श्री समझाते हमें न नोट चाहिए, न वोट, न प्लोट अपितु आपके जीवन की खोट चाहिए। जीवन अच्छा बनें। भोजन शुद्ध व सात्विक हो। मांसाहार मानव का भोजन नहीं है। मरे हुए प्राणियों को पेट में डालने से वह कब्रिस्तान बन जाता है। आप अपने भीतर पवित्र मंदिर का निर्माण करें।

इस दौरान कई व्यक्तियों ने व्यसन मुक्त जीने का संकल्प किया तो 751 व्यक्ति कर्मणा जैन बनें। प्रबुद्ध वर्ग भी काफी प्रभावित हुआ। सायंकालीन प्रवचन में अच्छी संख्या में उपस्थित होते थे। साध्वी श्री की वाणी व संगान में कोई ऐसा प्रभाव था कि लोग आकृष्ट हुए बिना नहीं रहते। साध्वी फूलकुमारी जी का मानना था– यह सब गुरुकृपा से ही हो रहा है, गुरु कृपा दृष्टि की व्याख्या शब्दों में बयां नहीं की जा सकती।

बिहार, बंगाल की यात्रा सानंद संपन्न कर साध्वी श्री ने जसोल में गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शन किए, उस समय गुरुदेव ने फरमाया– ''साध्वी फूलकुमारी जी ने बिहार, बंगाल व नेपाल में अच्छा कार्य करके सफलता प्राप्त की।''

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ के शब्दों में– ''साध्वी फूलकुमारी जी ने कछुएं की चाल चलकर सब जगह सफलता प्राप्त की।''

सन् 1980 से लेकर 2010 तक अग्रगामी बनने के बाद साध्वी श्री ने लगभग 28000 से अधिक कि.मी. की पदयात्रा कर हजारों लोगों को प्रतिबोधित किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व्यक्तित्व व कर्तृत्व

गौरवर्ण, मंझलाकद, भव्यललाट, शान्त चेहरा, फूल सी सुकोमल देह, मुस्कुराती मुख–मुद्रा, पवित्र आभामण्डल जितना आकर्षक था उससे भी अधिक आकर्षक था– आन्तरिक व्यक्तित्व।

करूणा व कोमलता उनके स्वभाव में इस प्रकार घुली हुई थी कि किसी को कटु शब्द कहना तो दूर अपितु जोर से भी नहीं बोलती थीं। साध्वीश्री की सहजता, सरलता व निष्पक्षता सबको अभिभूत कर देती थी। निर्मल जीवन स्फटिक मणि के समान था। ''समयं गोयम मा पमायए'' इस शास्त्रीय सुक्त से परिपूर्ण जीवन सर्वथा अप्रमत्तता का जीवन था। प्रमाद से कोसों दूर थीं।

शासन गौरव साध्वी श्री राजीमती के शब्दों में– ''साध्वी फूलकुमारी जी अपनी शैली से जीने वाली एक असाधारण साध्वी थीं। साधुजीवन की सफलता के पैरामीटर–उपशम, सेवाभाव, स्वाध्याय और व्यवहार कौशलता– ये सारे साध्वी श्री में पर्याप्त थे। दिनचर्या को व्यवस्थित रखती हुई, अपने में मस्त व संयम में स्वस्थ रहने वाली साध्वी जी थीं। जिनके स्वभाव में गुरुता, विनम्रता, सहिष्णुता और वीतरागता होती है, वे ही वास्तव में संत होते हैं। वह समता साध्वी श्री फूलकुमारी जी के जीवन में थी।''

बहुश्रुत–परिषद सदस्या साध्वी श्री कनक श्री जी के शब्दों में– ''साध्वी फूलकुमारी जी का हमारे साध्वी समाज में गौरवपूर्ण स्थान था। वे मधुर व्याख्यानी, सरस संगायिका, मृदुस्वभावी, व्यवहार कुशल साध्वी थी। आचार कुशलता, संघनिष्ठा व गुरुभक्ति अनुकरणीय थी।''

सकरात्मक सोच व उपशान्त कषायी साध्वी श्री जी जप व स्वाध्याय को दैनिक चर्या का अभिन्न अंग मानती थीं।

साधना सिद्धि के द्वार पर तब तक दस्तक नहीं देती जब तक शक्ति का विस्फोट नहीं होता। तप, जप, ध्यान, मौन आदि शक्ति संवर्धन के विभिन्न प्रयोग हैं। साध्वी श्री ने साधना को और अधिक परिपुष्ट करने हेतु जप का विशेष आलम्बन लिया। नमस्कार महामन्त्र, ऊँ भिक्षु–जय भिक्षु, ऊँ तुलसी– जय तुलसी, ऊँ महाप्रज्ञ गुरवे नमः के साथ–साथ सिद्धों के व **''ऊँ–ह्रीं–नमः''** के जप में तल्लीन रहती थीं। इष्ट शक्ति द्वारा प्रदत्त– ''संती–कुंथु''–पद्य रोम–रोम में रमा हुआ था। इस पद्य का प्रयोग जहां स्वयं के आधि–व्याधि का शमन करने में निमित्त बनता था, वहीं अपने इर्द–गिर्द रहने वाली साध्वियों तथा श्रद्धाशील श्रावक–श्राविकाओं की भी आधि–व्याधि को दूर करने में कारगर बनता था। जिसके कई उदाहरण आज भी स्मृति पटल पर अंकित हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विघ्नहरण, भिक्षु म्हारै प्रगट्यांजी, मुणिन्द मोरा आदि गीतिकाओं का संगान प्रतिदिन का क्रम था तो सिद्ध स्तवन में भी भाव–विभोर बन जाते। सिद्धों की स्तुति पर कई गीतों की रचना भी की।

निस्पृहता साधना का प्राण है– यह रूं– रूं में विकसित था। संयम जीवन के प्रति इतनी सजगता रहती थीं कि हर क्षण यही चिन्तन रहता मेरे संयमी जीवन में कहीं दोष न लग जाए। नियमित आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग जीवन चर्या के महत्त्वपूर्ण बिन्दु थे। खाद्य संयम के विभिन्न प्रयोग भी चलते थे। 38 सालों से तीन विगय से उपरान्त खाने के त्याग थे तो खाने में भी प्रायः नौ द्रव्यों से अधिक नहीं लेते थे। निर्जरा के बारह प्रकारों की सलक्ष्य साधना करते थे।

उम्र के 77वें वर्ष तक स्वयं अपने नाजुक कंधों पर वजन लेकर पदयात्रा करते रहें।

सहवर्तिनी साध्वियों के संस्कार निर्माण में भी पूरे जागरूक थे। कई बार फरमाते–मेरी हार्दिक अभीप्सा है कि मेरे साथ वाली सभी साध्वियां आराधक बनें। आचार–विचार मर्यादा का तहेदिल से पालन करें। गुरुनिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुआज्ञा के प्रति मन में किसी भी प्रकार का अन्यथा भाव न आए। हमारा लक्ष्य संघ प्रभावना का रहे। ''सहवर्ती साध्वियों में साध्वाचार के संस्कार कूट–कूट कर भरने का प्रयास किया।

जैनागम का प्रसिद्ध सुक्त ''आणाए संजमो आणाए तवो'' अर्थात्– ''गुरु आज्ञा ही संयम है और वही सच्चा तप है।'' भारतीय संस्कृति में गुरु का सर्वोच्च महत्त्व रहा है। शिष्य की विकास यात्रा में गुरु का अपूर्व योगदान रहता है। साध्वी श्री के कण–कण में गुरुनिष्ठा के गहन संस्कार थे। रोम–रोम में गुरुभक्ति स्फुरित थी। एक ही चिन्तन गुरुआज्ञा की विराधना करने वाल मोक्ष की विराधना करता है तथा भव–भ्रमण बढ़ाता है। गुरु आज्ञा को जीवन प्राण मानते हुए जीवन भर उसकी अनुपालना में तत्पर रहें। संयमी जीवन का एक ही संकल्प– ''मेरे द्वारा ऐसा कोई भी कार्य न हो जिसकी वजह पूज्य गुरुदेव श्री को मेहनत करनी पड़े।''

विकास का आकाश अनन्त है। अनन्त की उड़ान अनन्त का यात्री ही भर सकता है। साध्वी श्री फूलकुमारी ने उस उड़ान को भरने हेतु पुरुषार्थ के पंख फैलाए। अध्ययन, साहित्य सृजन, लेखन, कंठस्थ आदि विविध आयामों में व्यक्तित्व मुखर हुआ। इन आयामों के द्वारा न केवल स्वयं को सजाया–संवारा बल्कि संघ की श्री वृद्धि में भी योगदान दिया।

साध्वी श्री को मातृस्वरूपा तीन साध्वी प्रमुखाओं की छत्रछाया प्राप्त हुई। साध्वी प्रमुखा लाडाजी का तो विशेष वात्सल्य भाव रहा। इसी तरह वर्तमान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी प्रमुखाश्री महाश्रमणीवरा की विशेष कृपा दृष्टि रही। अपने भाग्य की सराहना करते हुए कहती– ''पता नहीं कौन से पूर्वजन्म के शुभकर्मों का उदय हुआ, जो मुझे इतना अच्छा धर्म संघ, ऐसे महान गुरु व सहवर्ती साध्वियों का योग मिला है।'' इस तरह पूर्ण आत्मतोष का अनुभव करती।

उनकी विशेषताओं का अंकन करते हुए– 30 जून 2011 आमेट 148 वें मर्यादा–महोत्सव के अवसर पर परम श्रद्धास्पद महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा साध्वी श्री को ''शासनश्री'' के रूप में स्वीकार किया गया।

वि.सं. 2046 योगक्षेम वर्ष में पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा **''सर्तकता आयोग''** की सदस्या भी बनाया।

पिच्चासी वर्ष की ढ़लती वय में भी संयमी जीवन के प्रति सतत् जागरूक रहती हुई क्षण–क्षण का सदुपयोग करती थी। गुरुदेव श्री महाप्रज्ञजी के शब्दों में– ''साध्वी फूलकुमारी जी उपशान्त कषायी हैं।'' वास्तव में आप उपशान्त कषाय की साधना में गतिशील थीं। वे जितनी अध्यात्म की गहराई में उतरी हुई थी, व्यवहारिक जीवन भी उतना ही सरस था। किसी अपेक्षा से कोई अन्य साध्वी भी यदि ग्रुप में दी जाती तो उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करती जैसा वर्षों से साथ रहने वाली साध्वी के साथ।

संघनिष्ठा, पूज्यवरों के इंगित की आराधना व नए–नए क्षेत्रों में निर्भीकता के साथ प्रभावी प्रवास से वे जन–जन की प्रिय बन गई।

कंठस्थ- भक्तामर, कल्याणमंदिर, शान्तसुधारस, रत्नाकर पच्चीसी, संस्कृत चौबीसी, चौबीसी, आराधना, जैन सिद्धान्त, दीपिका, षड्दर्शन समच्चय, न्याय कर्णिका, द्वात्रिशिंका, दसवैकालिक, पंचसूत्रम्, कालू–कौमुदी, नाममाला, अष्टाध्याय, देव–गुरु स्तोत्र, आलम्बन सूत्र, मनोनुशासन, अष्टकम, सिद्धस्तवन, उत्तराध्ययन के कतिपय अध्ययन।

थोकड़े- पच्चीस बोल, जाणपणा के पच्चीस बोल, पच्चीस बोल की चर्चा, सौ बोल, गतागत, सेर्यां, गुणस्थान द्वार, कायस्थिति, कर्म प्रकृति, इक्कीस द्वार, बावन बोल, संजय–नियंठा, बड़ी चर्चा, लघुदण्डक, तेरहद्वार, दण्डक द्वार, गमागम, खंडा, इकतीसा, गुणठाणा, कालूतत्त्वशतक आदि।

वाचन- साहित्य वाचन अध्ययन की प्रथम भूमिका है। आत्म–गहराई में अवगाहन करने की प्रक्रिया है। साध्वी श्री फूल कुमारी जी का साहित्य वाचन के प्रति गहरा रूझान था। अपने जीवन काल में चार बार सम्पूर्ण आगम बत्तीसी का अच्छी तरह पारायण किया। प्रायः आगम स्वाध्याय करते रहते ी। दसवें–आलियं के प्रथमचार अध्ययन प्रतिदिन सअर्थ मनोयोग पूर्वक चितारते। आगमों के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साथ–साथ अन्यान्य वाचन–भिक्षु अभिनिष्क्रमण, अर्जुनमालाकार, प्रभव– प्रबोध, कश्मीर–काव्य, अश्रुवीणा, मेघदूत, ज्ञानार्णव, चन्द्र–चरित्र, अध्यात्मोपनिषद, मुकुलम्, रघुवंश, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, हितोपदेश, षड्दर्शन समुच्चय, स्याद्वादमंजरी, तुलसी मंजरी, रयणबालका, कामयानी, कुरूक्षेत्र, भरत–भारती आदि के अतिरिक्त भिक्षु, जयाचार्य, आचार्यश्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ व आचार्य श्री महाश्रमण जी, साध्वी प्रमुखा श्री जी की सैकड़ों पुस्तकों के साथ–साथ साधु–साध्वियों की अन्य अनेक पुस्तकें तथा धर्मसंघ की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएं तथा अन्यान्य शिक्षाप्रद साहित्यों का सांगो–पांग वाचन किया। साहित्य वाचन के प्रति रूचि इतनी प्रबल थी जब भी कोई नई पुस्तक प्रकाशित होती, अविलम्ब उसे पढ़ने में उद्यत हो जातीं। हमने साक्षात् देखा– दिन में प्रायः 15 मिनट सोते, यदि इससे अधिक कभी नींद आ जाती तो तत्काल कहते– **''आज तो मेरा समय प्रमाद में चला गया।''** प्रायः कहते– साहित्य ने मुझे साधना के गुर सिखाएं हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संस्मरणों के आलोक में

एक दिन मैं साध्वी श्री फूलकुमारी जी के उपपात में बैठी थी। मैंने निवेदन किया– साध्वीश्री! आप अपने संयमी–जीवन के अनुभवों को बताकर मुझे अनुग्रहीत करें। साध्वी श्री ने फरमाया– अनुभव तो आत्मसात् करने के होते हैं, बताने के नहीं। पुनः मैंने कहा– आपने छोटी उम्र में दीक्षा ली, उस समय आपका अध्ययन गुरुदेव श्री की पावन सन्निधि में हुआ क्योंकि पारमार्थिक शिक्षण संस्था भी नहीं थी। निकटता से गुरु सन्निधि प्राप्त की हैं, अतः उन रोचक संस्मरणों को तो फरमाएं, जिससे हमें भी कुछ जानने व सीखने का मिल सके। मेरे इस निवेदन पर साध्वी श्री ने कुछ संस्मरण सुनायें जो मैं लिख रही हूं। कुछ साध्वी श्री की भाषा में व कुछ मेरी भाषा में–

गुरु चरणों के अनमोल क्षण–

परमाराध्य महाप्राण पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की पावन सन्निधि में बिताए गए जीवन के अमूल्य क्षण आज भी अणु–अणु में अद्‌भुत स्फूर्ति प्रदान करते हैं। दीक्षा के ठीक दो वर्ष पश्चात् पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा व सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति गुरु भगिनी साध्वी प्रमुखा श्री लाडांजी की अप्रतिम प्रेरणा एवं क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी श्री खूमांजी की उदात्त उदारता से मुझे गुरुकुलवास में रहने का सुन्दर सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मैं मात्र पन्द्रह वर्ष की थी। वह समय था– जब साध्वी समाज शिक्षा के क्षेत्र में उड़ान भरने को उत्सुक था। ज्ञान चेतना के जागरण में अहममिकिया चल रही थी। शिक्षा विकास का वह स्वर्णिम समय हम सभी में नए प्राणों का संचार कर रहा था। हमारी शिक्षा का प्रारम्भ कालू–कौमुदी एवं हेमचन्द्राचार्य रचित नाममालासे हुआ। गुरुदेव स्वयं अध्ययन करवातें तथा पक्ष में एक बार मौखिक परीक्षा भी लेते। उच्चारण की सूक्ष्म स्खलना भी आचार्य श्री को बर्दाश्त नहीं थीं। शुद्ध, स्पष्ट व अस्खलित सुनाने वालों को पुरस्कृत करवाते तो स्खलना करने वालों को आंख भी दिखाते थे। साध्वी समाज का उत्तरोत्तर विकास वर्धमान हो इसके लिए गुरुदेव सदैव प्रयत्नशील थे और विविध विधाओं में समायोजना करवाते। कभी संस्कृत सप्ताह की आयोजना तो कभी हिन्दी सप्ताह की। कभी संस्कृत समस्या की संपूर्ति, तो कभी वक्तृत्व कला व संगीतकला की आयोजना। गुरुचरणों के वे अनमोल क्षण आज भी स्मृति पटल पर अंकित हैं।

1. जल्दबाजी नहीं करना – एक दिन गुरुदेव ने पूछा– तुम्हें कितने थोकड़े आते हैं?मैंने कहा– बाईस। पुनः प्रश्न–केवली में कितने गुणस्थान हैं?मैंने तपाक से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कहा– 13वा, गुणस्थान। गुरुदेव ने बोध की भाषा में फरमाया– तेरहवां संयोगी केवली गुणस्थान तो चवदवां गुणस्थान कौन सा है?मैंने– तहत् गुरुदेव! दो गुणस्थान हो गए। पूज्यप्रवर ने शिक्षा प्रदान करवाते हुए– प्रश्न का उत्तर दो क्षण सोचकर देना चाहिए, जल्दबाजी नहीं करना। उस समय मुझे दीक्षित हुए मात्र पांच दिन ही हुए थे।

2. तब तो हमने भूल की - वि.सं.2000 नाल का घटना प्रसंग– मुझे दीक्षित हुए संभवतः पच्चीस दिन ही हुए होंगे। एक दिन गुरुदेव श्री ने पूछा– दशवैकालिक कितना याद किया?मैंने कहा– अभी चार अध्ययन कंठस्थ हुए हैं। गुरुदेव श्री– क्या पक्के आते हैं?मैंने– तहत्। अच्छा पक्का है तो सुनाओ। तीन अध्ययन तो सुना दिए पर, चौथे में लड़खड़ाने लगी। जहां–जहां अटकती, वहां–वहां गुरुदेव बड़े स्नेह से मुझे बता रहे थे। सम्पूर्ण अध्ययन इसी क्रम से सुनाया। स्मित हास्य के साथ आचार्य प्रवर ने फरमाया– उच्चारण तो शुद्ध है पर पक्का नहीं है। बाल सुलभता की भाषा में निवेदन किया– गुरुदेव! मुझे पक्का तो आता है, पर बीच में आपने बता दिया। गुरुदेव ने महानता के स्वरों में फरमाया– तब तो हमने ही भूल की है। यह थी महान गुरु की महानता और मेरे जैसी अज्ञ शिष्या की अज्ञानता।

3. गुरु का प्रासाद- वि.सं.2000 नाल का प्रसंग है। सर्दी का मौसम था। हम सभी साध्वियां साध्वी प्रमुखा श्री झमकूजी के साथ प्रातः गुरुवन्दनार्थ पहुंची। उस समय यह परम्परा थी कि गुरुवन्दन के पश्चात् एक साध्वी उच्चस्वर से एक–एक संतो का दीक्षा क्रम से नाम लेकर सामूहिक वन्दना करवाती थीं। उन दिनों नाम बोलने का मेरा क्रम था। एक दिन मै। वन्दना करते–करते धूज रही थी, जिससे आवाज भी धूजने लगी। गुरु श्री ने वात्सल्य की भाषा में– क्या सर्दी लग रही है?मैंने– तहत्। संयोग से उसी वक्त एक भाई ने रेशमी चद्दर की भावना भाई जो उसके ओढ़ी हुई थी। आचार्य प्रवर ने उसी समय व्रत निपजाया व करूणा की भाषा में फरमाया– **''नानकी! इ चद्दर री गाती बांध लेई, पछै तनै सर्दी कोनी लागै।''**

गुरु का पावन–प्रसाद पाकर मैं धन्यता का अनुभव करने लगी।

4. पुरस्कार और प्रायश्चित्त- उन दिनों हम समवयस्क साध्वियां आचार्य हेमचन्द्र रचित नाममाला कंठस्थ कर रही थीं हमारी पाक्षिक परीक्षा गुरुदेव लेते थे। जो साध्वी शुद्ध व पक्का सुनाती उसको प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कृत करवाते थे। उसी क्रम में मैं भी थी। गुरुदेव श्री की कृपा से मुझे अनेकों बार पुरस्कार मिला। एक बार जिस साध्वी को मुझे कंठस्थ सुनाने के लिए नियुक्त किया हुआ था, उसमें मेरे द्वारा प्रमाद हो गया। प्रमाद का प्रायश्चित तो मिलना ही था मुझे भी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रायश्चित मिला, मेरा मन खिन्न हो गया। चेहरा उदास हो गया। गुरुदेव श्री ने शिक्षास्वरों में फरमाया– साधु की साधना है कि वह पुरस्कार और प्रायश्चित्त में समचित्तता रखें मेरी ओर निहारते हुए– पुरस्कार में चेहरा खिल जाता है तो प्रायश्चित्त में उदास क्यों?

प्रायश्चित भी प्रमाद निरसन की प्रकाश किरण है।पूज्यपाद की अमृत बरसाने वाली वह शिक्षा सदा–सदा के लिए मेरे जीवन का आलोक बन गई।

5. संस्कृत भाषा की महत्ता– वि.सं. 2005 छापर प्रवास। पूज्यप्रवर के उपपात में हम साध्वियां अध्ययन कर रही थीं। पूजयवर ने संस्कृत भाषा की उपयोगिता व महत्ता बताते हुए कहा– संस्कृत के लिए एक बार तो कठिन श्रम करना पड़ता है पर, उसकी निष्पत्ति आनन्ददायी है। इसके विकास के लिए पहले छोटे–छोटे निबन्ध व श्लोक रचना आवश्यक है। श्लोक रचना के लिए सबसे पहले अनुष्टपछन्द में समस्या प्रदान की –''प्रणमामि पदे–पदे....''। उसके बाद क्रमशः उपजाति, बसन्ततिलका आदि विविध छन्दों में समस्या संपूर्ति करवाते। हमने श्लोक रचना प्रारम्भ की, जो भी पादपूर्ति मिलती श्लोक बनाते। गुरुदेव स्वयं बाल साध्वियों को प्रोत्साहित करते तथा टूटी–फूटी रचना को पुनः सेशोधित भी करवाते। एक दिन आचार्य प्रवर ने फरमाया– ''अब तुम्हारे पांखें आने लगी है। छोटी–छोटी उड़ाने भरने वाला बड़ी उड़ान भी भर लेता है।'' गुरुदेव श्री के पुण्य प्रसाद से छापर चातुर्मास्य में संभवतः 250 श्लोकों की रचना की होगी। अन्यथा मेरे जैसी तीन क्लास पढ़ी हुई अबोध साध्वी संस्कृत में कुछ लिखे, कल्पना से परे की बात थी।

6. गुरु का विश्वास– वि.सं.2006 जयपुर। हम सब साध्वियों की परीक्षा चल रही थी। उस समय मैं योग्यतर (दूसरे वर्ष) की परीक्षा दे रही थी। व्याकरण का पेपर तो दे दिया पर, दूसरे दिन अचानक तेज बुखार ने घेर लिया। इस वजह से मैं पेपर नहीं दे पाई। अग्रिम वर्ष के लिए जब तैयारी शुरू की तब साध्वी प्रमुखा श्री लाडांजी ने गुरुदेव से निवेदन किया– साध्वी फूलकंवर ने पिछले वर्ष परीक्षा की तैयारी तो अच्छी की थी पर, बुखार की वजह सिर्फ एक ही पेपर दे पाई। आपकी मर्जी हो तो योग्यतम (तीसरे वर्ष) की परीक्षा दे दे। अन्यथा पीछे रह जाएगी।

गुरुदेव श्री ने कृपा के स्वरों में फरमाया– ''यह मनायोग पूर्वक अध्ययन करती हैं, व्याकरण में अंक भी अच्छे आए हैं। अतः यह तीसरे वर्ष की परीक्षा दे सकती है।'' गुरु विश्वास के यो बोल सुनकर मैं भाव–विभोर बन रही थी।

7. शिक्षा के अनमोल बोल– दिल्ली चातुर्मास के दौरान हम सब साध्वियां दोपहर के समय गुरुदेव की सन्निधि में वाचन करने जाती। एक दिन पढ़कर जब हम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जाने लगे, गुरुदेव श्री ने संबोध की भाषा में फरमाया– देखो, तुम लोग जहां बैठी थीं, वहां की जगह पसीने से तरबतर हो गई, दूसरा देखे तो अच्छा नहीं लगता। कल से बिछाने के लिए कम्बल लेकर आया करो। दूसरे दिन से ही हमने कम्बल बिछाना शुरू कर दिया। इतनी छोटी–छोटी बातें सीखाकर पूज्यश्री ने साध्वी समाज की विवेक चेतना जागृत की।

8. अनूठा अनुग्रह- आचार्य श्री तुलसी का वि.सं. 2006 का चातुर्मास जयपुर फरमाया हुआ था। विहार में साधु–साध्वियां ज्यादा होने की वजह रूकने के लिए जगह आदि में कठिनाई महसूस हो रही थी। उस यात्रा में मातुश्री वदनांजी व साध्वी प्रमुखा श्री लाडांजी भी थे। मातुश्री अवस्था की वजह धीरे–धीरे चल रहे थे। गुरुदेव ने फरमाया– कुछ साध्वियां हमारी सेवा में रह जाएगी व कुछ मातुश्री के साथ आ जाएगी। साध्वी प्रमुखा श्री ने सत्ताईस साध्वियों के नाम गुरुदेव की सेवा में तय किए।

साध्वी विजयश्री जी (रतनगढ़) व मेरा नाम माजी महाराज के साथ था। साध्वी विजयश्री जी ने निवेदन किया– मैं गुरुदेव की सेवा में रहना चाहती हूं। सा. प्रमुखाश्री ने कहा– गुरुदेव को निवेदन करो। वे गुरुदेव के पास पहुंच गए। काफी देर तक वापस नहीं आने पर साध्वी प्रमुखा श्री जी ने फरमाया– विहार का समय होने वाला है, वे अभी तक आए नहीं। मेरी तरफ ईशारा करते हुए कहा– जाओ साध्वी विजयश्री को बुलाकर लाओ। मैं एक साध्वी को साथ ले विजयश्री को बुलाने गई। जैसे ही मैं गुरुदेव के उपपात में पहुंची तत्काल गुरुदेव ने फरमाया– बोलो क्यों आई हो?मैं भूल गई कि क्यों आई, सहजता से निवेदन किया– मैं भी आपश्री की सेवा में रहना चाहती हूं। आचार्य प्रवर– क्या तुम्हें साथ नहीं रखा?करबद्ध निवेदन किया– साथ में बहुत साध्वियों होने की वजह मुझे माजी महाराज की सेवा में रखा है। कृपाकर मुझे गुरुदेव की सेवा में रखाएं। गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए– तुम छोटी हो, हमारे साथ लम्बा चलना पड़ेगा, अच्छा है माजी के साथ धीरे–धीरे चलोगी। मैंने कहा– मैं चल लूंगी, मेरा मन श्री चरणों में रहने का है। गुरुदेव ने अपने साथ रहने की स्वीकृति प्रदान करवा दी। मैं बांसों उछलती हुई प्रसन्न मुद्रा में ठिकाने पहुंची तथा प्रमुखाश्री को सारी बात निवेदन की।

यह थी गुरुदेव श्री तुलसी की बाल साध्वियों के प्रति कृपा दृष्टि।

9. घबराना नहीं- ''लाडनूं मर्यादोत्सव के दौरान पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में दोपहर के समय तत्वज्ञान संगोष्ठी चल रही थी। युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने प्रश्न पूछा– ''प्राणातिपात पाप, प्राणातिपात आश्रव व प्राणातिपात ठाणा'' किसे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कहते हैं?साधु–साध्वियों ने उत्तर दिए पर, सही नहीं थे। मुझे भी पूछा गया। मैंने उत्तर तो सही दिया पर, बीच में एक मुनि जी ने तर्क प्रस्तुत किया। मैं सकपका गई। गुरुदेव ने वात्सल्यमयी वाणी में फरमाया– डरती क्यों हो?मैं मौन थी। पुनः फरमाया– उत्तर सही है, घबराना नहीं चाहिए, साहस रखना चाहिए।

कृपा बोल सुनकर मैं हर्ष–विभोर बन गई।

ऐसे और भी अनेक सुखद संस्मरणों की अवगति साध्वी श्री समय–समय पर देती रहती थीं, उनमें से एक–दो संस्मरण मैं अपनी भाषा में भी बताना चाहूंगी–

1. सरलता- साध्वी श्री फूलकुमारी जी को दीक्षा लिए मात्र 5–6 महीने ही हुए थे। भिवानी का प्रसंग है– एक दिन रात्रि में चान्द की चान्दनी से खलके (पत्रगृह) के पल्ले की पलेवणा करने लगे। एक रत्नाधिक साध्वी जी ने कहा– फूलकंवरजी! कांई करो हो?बाल सुलभ स्वरों में कहा– ''महाराज! आज मैं पेली पलेवणा करणी भूलगी, इं वास्ते खलकै रै पल्लेरी पलेवणा करूं हूं।'' साध्वी जी– भोला! रात नै पलेवणा थोड़ी हुवै। निश्छल हृदया बाल साध्वी ने कहा– महाराज! क्यूं कोनी हुवै, इतो तो च्यानणो है। संबोध की भाषा में साध्वी जी ने कहा– बाई! पलेवणा सूरज रै च्यानणै में हुवै। बाल साध्वी–तहत् महाराज! कृपा की।

यह थी साध्वीश्री की सरलता।

2. निश्छल हृदया- दीक्षित हुए दो वर्ष हुए थे। पूज्य गुरूदेवश्री का हांसी चातुर्मास था। व्यवस्थापिका साध्वी ने साध्वियों को अपनी–अपनी जगह धारने का निर्देश दिया। निश्छल हृदया फूलकुमारी जी ने एक आले में कपड़ा रखा हुआ था, उससे उस आले को साफ करके स्वयं का सामान रख दिया। कुछ ही समय पश्चात् एक साध्वी जी आए, पूछा– यहां सामान किसने रखा है। सहज स्वरों में फूलकुमारी जी ने कहा– मैंने रखा है। तुमने कैसे रखा?खाली पड़ा था। खाली कब था, क्या हाथ लूणिया नहीं था?साध्वीश्री ने कहा– ''मैंने तो सोचा ऐसे ही कपड़ा पड़ा है। मुझे पता नहीं था, कृपाकर अब आप रख दें।

इससे प्रतीत होता है कि साध्वी श्री का हृदय कितना निश्छल था। भावों में भद्रता, श्रेय के प्रति सजगता और जीवन में सरलता उजागर होती थी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यात्रा संस्मरण

''मंजिल उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है।
परों से कुछ नहीं होता, हौसलों से बाजी जीती जाती है।''

''आंखों देखा हाल– पढ़िए साध्वीश्री फूलकुमारी जी का यात्रा काल''

1. अब चौका गन्दा नहीं रहेगा- सन् 1981, बिहार शरीफ में हिन्दु–मुस्लिम का भयंकर दंगा चल रहा था। बिहार–यात्रा के दौरान पटना से दस कि.मी. पूर्व जेठुली गांव में एक मुस्लिम भाई के घर रूके। दंगे के समय मुस्लिम घर में जैन साध्वियों का ठहरना, आश्चर्य की बात थी। शाम होते ही मकान–मालिक ''कुरू बाबु'' ऑफिस से घर आए। साध्वियों को देख हर्षित व चकित थे। वार्ता के दौरान उन्होंने कहा– यदि मुझे पहले पता होता तो ग्रामवासियों को प्रवचन सुनने की प्रेरणा देता। फूलकुमारी जी ने कहा– कोई बात नहीं। आप सपरिवार ही सुन लें। प्रवचन सुनने पूरा परिवार पहुंच गया। प्रवचन के पश्चात् साध्वी श्री ने कहा– संतो की गति उल्टी होती है। वैसे तो टेक्स मकान–मालिक लेता है। मगर हम आपसे टेक्स लेंगे। विस्मय के साथ कुरू बाबु ने पूछा– आप क्या लेना चाहेंगे?साध्वीश्री– आपकी प्रिय वस्तु। दो क्षण चिन्तन करके कहा– साध्वी जी! आज तक मेरा चौका गन्दा था, हम मांस–मींट खाते हैं। आज भी हमारे घर मांस का ही भोजन बना हुआ है। पर आज शाम से सपरिवार मांस का त्याग करते हैं। उनका सारा परिवार शिक्षित था। पटना से समागत लोगों से कुरू बाबु ने कहा– साध्वी श्री जी की वाणी में जादुई प्रभाव है, जिसका परिणाम आज मैं भी आपका भाई बन गया हूं।

2. जदिया निवासी डॉ. आनंदी जो प्रतिदिन अपने हाथ से बकरा काट कर खाता था तथा दो बोतल शराब पीता था। उसकी वजह से कई रोगों से ग्रसित था। डॉक्टरों की राय थी– यदि शांति से जीना है तो मांस–मदिरा को छोड़ना होगा। आदतन व्यक्ति को कफन ओढ़ना मंजूर है मगर व्यसन छोड़ना बेहद मुश्किल है। जो आदत प्रयत्नों से नहीं छूटी वह आदत साध्वी श्री जी की प्रेरणा से तथा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से छूट गई, और डॉ. आनंदी मांस और शराब को जिन्दगी भर छोड़कर स्वस्थ व नेक इन्सान बन गया।

3. मुझे भी गुरु चाहिए- रामपुरा (बिहार) में बमबम झा (ब्राह्मण) जो बहुत अच्छे योगाभ्यासी, तथा 24 प्रकार की योग विधाओं में निष्णात है। खेचरी मुद्रा के साक्षात् प्रयोग भी दिखलाए, जिनके 3000 चेले। रात में स्वप्न देखते हैं– मेरे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आंगन में पांच दिव्य ज्योतियां उतरी हैं। उसी दिन साध्वियों के आगमन की सूचना मिली। लोगों को पूछा– कौन है, कितनी है?पता चला पांच जैन साध्वियां हैं। सुनते ही तत्काल अपनी जगह खाली कर दी। अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे– मेरा स्वप्न आज ही फल गया। साध्वियों को देखने के लिए घर में भीड़ उमड़ पड़ी। ''देव–गुरु–धर्म'' पर प्रवचन रखा गया। बमबम झा ने सोचा– मैं 3000 चेलों का गुरु पर मेरे अभी तक कोई गुरु नहीं है। मुझे भी गुरु बनाना चाहिए। ऐसे त्यागी, तपस्वी, निःस्वार्थ चेता साधु अन्यत्र मिलने मुश्किल हैं। मैं कितना सौभाग्यशाली हूं घर बैठे गंगा आ गई। मुझे भी इस पवित्र गंगोत्री में स्नान करना है, फलतः उन्होंने जैन दीक्षा स्वीकार की। बमबम झा के जैन दीक्षा की हलचल न केवल उनके गांव में अपितु आस–पास के गांवों में भी फैल गई। ऐसा अनूठा वातावरण बन गया कि अनेक व्यक्तियों को जैनधर्म के प्रति रूझान पैदा हुआ। फलतः 45 व्यक्तियों ने एक साथ जैन दीक्षा स्वीकार की। जब बमबम झा को प्रेक्षाध्यान पद्धति की जानकारी दी गई तब उन्होंने कहा– यह पद्धति वैज्ञानिक पद्धति है। मैं स्वयं तो इसका प्रयोग करूंगा ही साथ ही इसका प्रचार भी करूंगा।

जब उसने बीदासर में गणाधिपति गुरुदेव श्री व युवाचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किए तब परिचर्चा के दौरान उसने कहा– जिनकी शिष्याएं इतनी विद्वान हैं, उनके गुरु का तो कहना ही क्या?आचार्यवर ने फरमाया– ऐसा व्यक्ति प्रेक्षाध्यान में अच्छा योगदान दे सकता है।

जब बमबम झा के डकैती हुई तो लोगों ने व्यंग किया– जैन बनने का फल मिला है तब झा ने कहा– क्या जैनेतर के डकैती नहीं होती?उसके सटीक जवाब से सब चुप हो गए।

4. मेरे पापा भी बहुत खाते हैं- कलियागंज का तीस वर्षीय युवक, जो सालाना साठ हजार रुपये नशे में बर्बाद करता था। स्वयं के साथ दोस्तों व अफसरों को भी शराब पिलाता था। उसकी इस आदत की वजह पूरा परिवार परेशान था। उसका आठ वर्ष का बेटा भी जर्दे का पान खाने लगा।

एक दिन साध्वीश्री ने पूछा– संजय! क्या तू जर्दा खाता है। बच्चा तपाक से बोला– हां, खाता हूं। कितने पान दिनभर में खा लेता है?पूरे दिन में पांच। साध्वीश्री– देखो, अभी से जर्दे के इतने पान खाते हो यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नहीं है। बच्चे ने तत्काल कहा– साध्वी जी! मैं तो पांच ही खाता हूं, मेरे पापा तो दिनभर खाते हैं, गिनती ही नहीं है। साथ में शराब भी पीते हैं। उसका उत्तर सुन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वियां अवाक् रह गईं। साध्वीश्री ने उसके पापा से कहा– सुनो, बेटा क्या कह रहा है। आपको देखकर आज यह मासूम जर्दा खाता है, कल शराब और जुआ भी सीख जाएगा। आपकी वजह इसका भविष्य धूमिल हो सकता है। इस प्रकार विभिन्न उदाहरणों द्वारा उन्हें समझाने का प्रयास किया। काफी देर समझाने के बाद उसकी विवेक चेतना जागृत हो गई। उसी समय पूरे परिवार की साक्षी से जीवन भर व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प स्वीकार कर लिया।

5. गंगा में बहा देंगे- फारबिसगंज जाते समय जीवछपुर गए। साध्वीश्री के प्रवचन के विषय प्रायः ''देव–गुरु–धर्म, ''शराब है खराब, व्यसन जीवन की बर्बादी, आदि रहते थे। रात्रि में ग्रामीण लोगों के मध्य प्रवचन रखा गया। प्रवचन से प्रभावित होकर ग्रामीण लोगों ने मद्य–मांस के परित्याग किए। उस दिन गांव का मुखिया (सरपंच) भी उपस्थित था। दूसरे दिन जब विहार हो रहा था तो जयघोषों को सुनकर मुखिया व उनके साथ अनेक लोग नंगेपांव दौड़े–दौड़े आए। और बाले– 'मेरी कुटिया तो पावन करो। साध्वियां कंधो पर वजन लिए ही उनके घर गए। साध्वीश्री ने खड़े–खड़े ही उपदेश दिया। सुनकर परिवार के पांच सदस्यों ने कहा– ''साध्वी जी! हम आज से शराब का सेवन नहीं करेगें। साल में 2, 2.5 लाख रुपया शराब पर व्यय होते हैं। अभी भी 50000 का स्टॉक हमारे पास है। आज सारी शराब हम किसी को भी देगें। साध्वीश्री– जो खुद के लिए बुरी है, उसे दूसरों को दोगे, यह तो ठीक नहीं है। तब बोले– अच्छा तो आज हमारे घर में गंगा आई है, अतः हम शराब को गंगा में बहा देगें।

6. निहाल हो गया- किशनगंज का एक युवक, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवार का था। पर संगत–सोसायटी के कारण जुए की लत लग गई। पिताजी समझाते–समझाते परलोक पधार गए। एक दिन जुए में पचास हजार रुपये जीतकर प्रवचन सुनने आया। योग से उस दिन प्रवचन का विषय भी जुए से सम्बन्धित था। प्रवचन समाप्ति के बाद निकट दर्शनार्थ आया। साध्वीश्री को उसकी सारी स्थिति पता थी। वार्ता के दौरान पूछा– बोलो श्रावकजी! आज प्रवचन कैसा लगा?बोले– महाराज! आज के प्रवचन ने तो मेरी आंखें ही खोल दी। लगता है आज तो पूरा प्रवचन मेरे पर ही था। मेरी वजह से पूरा परिवार असंतुष्ट है। मुझे समझाते–समझाते पिताजी दुनिया से चले गए। चाचाजी भी नहीं रहे। आज मैं सबकी साक्षी से सदा–सदा के लिए इस बुराई से मुक्त बन रहा हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. डाकू से इन्सान- गुलाबबाग चातुर्मास के बाद बिहार, नेपाल के अध्यक्ष पदमचन्दजी पटावरी ने निवेदन किया– साध्वीश्री आप उन क्षेत्रों में पधारें, जहां के लोग जैन साधु की चर्या से अनभिज्ञ हैं। उन्होंने क्षेत्रों के नाम भी लिखकर दिए। क्षेत्र स्पर्शना के दौरान साध्वी श्री मधेपुरा जिले के एक छोटे से ग्राम पुरैनी में पधारे। गांव में पहली बार जैन साध्वियों को देख लोग आश्चर्य चकित हो रहे थे। वहां श्री डूंगरगढ़ का परिवार भंवरलाल जी गोलछा आदि चार भाईयों के घर थे। प्रतिदिन रात्रिकालीन प्रवचन की उपस्थिति हजार– बारह सौ व्यक्तियों की होती थी, क्योंकि आस–पास के छोटे–छोटे गांवों से भी लोग आते थे। प्रवचन सुनने की ऐसी व्यवस्था थी कि पूरे गांव में सुनाई देता था। सप्त दिवसीय प्रवास के बाद विहार का अवसर आया। साध्वीश्री ने दक्षिणा मांगी। सुनते ही सब चौंक गए। आपस में बातें करने लगे अरे यह क्या?हमने तो सुना था कि जैन संत रुपये–पैसे कुछ भी नहीं रखते पर.....। सब अपनी–अपनी पोकेट टंटोलने लगे। हलचल को देख साध्वीश्री ने कहा– 'बन्धुओं! हम दक्षिणा में रुपये–पैसे नहीं, सिर्फ जीवन की खोट ही लेते हैं। ऐसा सुनते ही त्याग–प्रत्याख्यान का क्रम शुरू हो गया। अचानक एक तेज आवाज, जो प्रवचन पाण्डाल के बाहर से आई थी, कानों में टकराई– ''साध्वी जी! मैं आज के बाद जिन्दगी भर चोरी डकैती नहीं करूंगा।'' सब इधर–उधर देखने लगे। सबकी दृष्टि द्वार पर खड़े डाकू मोहन पर टिकी। पूरी जनता आश्चर्य चकित, टकटकी लगाए सहमी–सहमी मोहन को देखने लगी। जानकारी लेने पर पता चला– यह मधेपुरा जिले का खूंखार डाकू है। इसके आतंक से पूरा जिला भयभीत है। जब इसके पिता की मृत्यु हुई, इकलौता बेटा दुकान में कफन लाने गया तो देखते ही सारी दुकाने बन्द हो गई, किसी ने कफन नहीं दिया। मोहन को साध्वीश्री ने आगे दर्शन करने को कहा। जब वह निकट आया तो साध्वी जी ने पूछा– बोलो भाई क्या कहना चाहते हो। मोहन– मैं जिन्दगी भर चोरी–डकैती छोड़ रहा हूं। उसकी तीव्र भावना को देखते हुए जनता की साक्षी से उसे संकल्प करवा दिया।

दूसरे दिन पुरैनी से विहार कर साध्वियां मधेपुरा आ गयीं। पुरैनी से भंवरलाल जी आए और कहा– मोहन गुरु धारणा लेना चाहता है। साध्वीश्री ने कहा– हमारा तो पुनः पुरैनी जाना संभव नहीं है, यदि मोहन दर्शन कर सके तो ठीक रहेगा। मोहन दर्शनार्थ आया। परिचय पूछा– उसने बताया– ''मैं मोहन अग्रवाल हूं, मेरी उम्र बाईस वर्ष की है। मैं हर बुराई से ग्रस्त हूं। चोरी–डकैती मेरा पेशा है। यह धन्धा मैंने चौदह वर्ष की उम्र में शुरू कर दिया था। इन आठ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्षों में मैने 12 बार डकैती, 11 मर्डर कर दिए। चोरी की तो कोई गिनती ही नहीं है। जिज्ञासा के स्वर में साध्वियों ने पूछा– तुम्हारे में अचानक बदलाव कैसे आया?मोहन–साध्वीश्री! मैं पुरैनी प्रवास के दौरान नियमित आपका प्रवचन सुनता था। उससे मेरे जीवन में नया बदलाव आया। मेरे भीतर का दानव इन्सान बनने के लिए आतुर बन गया। मैंने निर्णय लिया मुझे सभी बुराइयों से निजात पाना है।

गुरुधारणा के नियमों को अच्छी तरह समझकर मोहन कर्मणा जैन बना। दो तीन दिन स्थानीय अखबारों में बड़े–बड़े कॉलम में खबरें छपी।

दूसरे दिन वह अपने एक साथी डाकू राजकुमारी को लेकर आया। छब्बीस वर्षीया राजकुमारी ने बताया– साध्वीजी! मैंने आज तक सौ डकैती, तीस मर्डर तथा अनगिनत चोरियां की हैं। और तो क्या, स्वयं के मां–बांप व भाई का घर भी मैंने नहीं छोड़ा। साध्वीश्री ने उसे भी समझाया। प्रेरणा से प्रभावित होकर राजकुमारी ने भी जिन्दगी भर के लिए चोरी–डकैती छोड़ दी।

मोहन ने अपनी आत्म कहानी गुरुदेव को पत्र द्वारा अवगत कराई। जिसे लाडनूं में प्रवचन के मध्य सुनाया गया। उस समय आचार्यश्री ने फरमाया– ''साध्वी फूलकुमारी जी, जो अभी बिहार में हैं, वह नारी होते हुए भी पुरुष से बढ़कर काम कर रही हैं।'' गुरुदेव के आदेश से पुनः मधेपुरा जिले में पुरैनी गए तब मोहन ने कहा– साध्वीश्री! मेरे उपर कई वारंट आए जिसमें तीन–चार मर्डर के थे पर सच्चाई के कारण बच गया।

जिस मोहन से पूरा जिला कांपता था अब वह पूर्ण शांत हो गया।

8. आप दो दिन पहले नहीं आते तो.....

यात्रा के दौरान साध्वियों का जोगीदास ग्राम में जाना हुआ। वहीं का एक व्यक्ति शंकरदास ग्रामवासियों के साथ प्रवचन सुनने आया।

एक फैक्ट्री के कारण शंकरदास का अपने भाई के साथ झगड़ा चल रहा था। शंकर के मन में लोभ जगा। भाई का देहान्त हो गया। उसने सोचा अब यदि भाभी को मरवा दूं तो मेरी समस्या समाप्त हो जाएगी। फैक्ट्री मेरे पास रह जाएगी। गुंडो को ग्यारह सौ रुपये देकर भाभी को मरवाने का तय कर लिया ।

उस दिन ''देव–गुरु–धर्म के साथ 'अहिंसा पर प्रकाश डाला गया। प्रवचन को सुनकर उसका अन्तर दिल कचोटने लगा। गुरुधारणा के नियमों को जब साध्वीश्री ने विस्तार से समझाया तो उसका हृदय बदल गया। और गुरुधारणा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वीकार करते हुए अपनी मनोभावना को व्यक्त करते हुए कहा– साध्वीश्री! आप यदि दो दिन पहले नहीं आते तो मैं अपनी भाभी की हत्या करवा घोर पाप अर्जन कर लेता।

उसे नमस्कार महामन्त्र व गुरुमन्त्र का महत्व समझाया गया। वह दैनिक चर्या के अंग में इनको समाविष्ट कर पूरी श्रद्धा के साथ जाप करता। लाडनूं में गुरुदेव श्री के दर्शन भी किए।

कुछ महिनों के बाद शंकर की पत्नी के स्तन कैंसर हो गया। डॉक्टर भी उत्तर दे चुके थे। पर शंकर निराश नहीं हुआ। गुरुश्रद्धा व मन्त्रश्रद्धा उसके रोम–रोम में रमी हुई थी। पत्नी को बचाने के लिए पूर्वाभिमुख हो जप करता। कुछ दिनों में ही पत्नी के शरीर में रासायनिक परिवर्तन होने लगा। गांठ स्वतः ही फूट गई, जिसमें से लगभग 250 ग्राम मवाद निकला। पत्नी स्वस्थ होने लगी। डॉ. भी आश्चर्य चकित थे।

एक बार घर से तीन फुट की दूरी पर आग लग गई। पास में ही शंकर की मील थी। जिसके चारों ओर घास–पूस का ढ़ेर था। रात के बारह बजे का समय कोई उपाय नहीं क्योंकि हवा भी मील की तरफ चल रही थी। वह तन्मयता से जप में लीन बन गया। कुछ ही क्षणों में हवा का रूख बदल गया। मील बच गई। प्रातः एस.डी.ओ. आदि ने पूछा– यह बचाव कैसे हुआ?उसने कहा– मेरे गुरु द्वारा बताए कुछ मंत्रों से। पूछा गया– तुम्हारे गुरु कौन हैं?जैन धर्म के आचार्य तुलसी।

सभी चकित थे, मन्त्र के चमत्कार से।

इस प्रकार और भी अनेक रोचक संस्मरण यात्रा पथ से जुड़े हुए हैं, जो स्मृति–पटल पर अंकित हैं।

अध्यात्मिक चिकित्सा : मन्त्रों द्वारा

साध्वी फूलकुमारी जी ने जहां सैकड़ों व्यक्तियों को व्यसन–मुक्त बनाकर सन्मार्ग दिखाया तो काफी व्यक्तियों को सच्चे गुरु की पहचान बताकर कर्मणा जैन भी बनाया। इसके साथ ही मंत्रबल, इष्टबल, गुरुबल के आधार पर लोगों की आध्यात्मिक चिकित्सा की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुत है आस्था के बल पर होने वाली कुछ घटनाएं–

1. उपद्रव शांत हो गया– फारबिसगंज का एक युवक बाहरी छाया से आक्रान्त था। सारे उपचार विफल हो रहे थे। उसके परिवार की कुछ बहिनें साध्वी श्री के पास पहुंची तथा पूरी स्थिति बताई। साध्वीश्री ने ''ओम् अ.भी.रा.शि.को.नमः'' इस मंत्र का अनवरत जप करने की प्रेरणा देते हुए कहा– पलंग के चारों ओर इस मंत्र को कागज पर लिख चिपका देना। बहनों ने घर जाकर प्रयोग शुरू किया। कुछ समय बाद वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा– ''बंद करो बोलना, चुप हो जाओ। जिसने यह मंत्र बताया है, उसे मैं मार दूंगा।'' यह सुन घर वाले घबरा गए। द्रुतगति से ठिकाने पहुंचे, बोले– महाराज! काम ज्यादा बिगड़ गया। पूछा– क्यों, क्या हुआ?वह कहता है– मैं मंत्रदाता को मार दूंगा। साध्वीश्री– गुरुदेव की छत्रछाया हमारे ऊपर है अतः हमें मारने वाला कोई नहीं है। आप अपना क्रम चालू रखें।

तीन दिन बाद उपद्रव शांत हो गया।

2. मुझे उबार दिया– बनमनखी का एक युवक अचानक उपद्रव ग्रसित हो गया। मंत्र, डॉक्टर, वैद्य सभी से निदान करवाए पर ठीक नहीं हुआ। उस युवक के भाई ने अपने पिताजी से कहा– यहां जैन साध्वियां आई हुईं हैं। साध्वियों के मंत्र से भाई ठीक हो सकता है। परिवार वाले साध्वीश्री के पास आए, सारी स्थिति की जानकारी दी। साध्वीश्री जी दर्शन देने उसके घर गए। देखा– वह युवक पागलों की तरह बकवास कर रहा है। वहां का पूरा वातावरण भयभीत व गमगीन था। साध्वीश्री ने मंत्र आदि सुनाकर, मंगलपाठ सुनाया। और ''ऊँ अ.भी.रा.शि.को. नमः'' जप किया तथा घरवालों को अनवरत इसी मंत्र को जपने की प्रेरणा दी। लगभग 6–7 घंटों बाद ऐसा चमत्कार हुआ वह युवक बिना सहारे चलकर आया और बोला साध्वीश्री जी – आपके इन मंत्रों ने मुझे उबार लिया।

साध्वीश्री – भाई! यह तो गुरु–कृपा का ही परिणाम है। वह युवक तथा पूरा परिवार श्रद्धा से नतमस्तक था।

3. ''ओम् भिक्षु'' जप का चमत्कार– ओबरा (यू.पी.) निवासी श्रावक ताराचन्दजी अग्रवाल, जो एक माह से ''ओम् भिक्षु जय भिक्षु'' जप में संलग्न थे। एक दिन साध्वी श्री फूलकुमारी जी उनको दर्शन देने घर गए। तत्क्षण उन्होंने कहा– साध्वीश्री! मुझे आपने निहाल कर दिया। साश्चर्य साध्वीश्री ने पूछा– कैसे?ताराचन्द जी– मेरी आंखों की ज्योति आ गई। साध्वीश्री ज्योति कब आ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गई?तारचन्द ने कहा– एक माह हो गया। साध्वीश्री– इतने दिन बताया क्यों नहीं?ताराचन्दजी – साध्वीश्री! आचार्य भिक्षु की त्रयोदशी के दिन आपने स्वामी जी की महत्ता को बताते हुए सवा लाख के जप की प्रेरणा दी। उसी दिन से मैंने जाप करना शुरू किया। आज मैं भिक्षु के नाम का चमत्कार साक्षात् देख रहा हूं, बताया इसीलिए नहीं कि कहीं मेरे नजर नहीं लग जाए।

'ओम भिक्षु' जप के चमत्कार की बात पूरे ओबरा में पानी में तेल–बिन्दु की तरह फैल गई। हर व्यक्ति के मुंह पर एक ही चर्चा– तेरापंथी साध्वियों का कमाल देखो, आंखों में ज्योति आ गई। अब तो अनेक लोग अपनी–अपनी समस्याओं को ले हमारे पास आने लगे। एक दिन साध्वी फूलकुमारी जी ने लोगों को समझाया हम कोई डॉक्टर, वैद्य नहीं है। हमारे पास तो केवल गुरु मंत्र है। उसका जप करो आत्मशान्ति मिलेगी। फिर भी लोग माने नहीं। संयोग से जो भी आते मंत्र सुनते ही उनकी समस्याआें पर विराम लग जाता।

ओबरा–वासियों की श्रद्धा द्विगुणित हो गई। ऐसी ही एक आश्चर्यकारी घटना है– बाईस संप्रदाय के परिवार की–

4. युवक सतीष अपनी इकलौती भतीजी को गोदी में लेकर आया और बोला– साध्वी जी! यह 25 दिनों से बहुत बीमार है। न कुछ खाती है और न नींद लेती है। इसके लिए आप मुझे कुछ बताएं? साध्वीश्री– मैं डॉक्टर नहीं हूं। युवक– मुझे डॉक्टर से अधिक आप पर विश्वास है। आप ऐसा मंत्र सुनाएं, जिससे हमें शांति मिल जाए। साध्वीश्री ने उस बालिका को मंगलपाठ व ''संतिकुंथु'' मंत्र सुनाया। दूसरे दिन सतीश ने कहा– साध्वीश्री! आपके मंत्र का जादू हो गया, आधा घंटे में बालिका खेलने लग गई।

चमत्कार सभी को प्रिय होते हैं। चमत्कार वह चुम्बक है जो व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेता है। चमत्कार को सभी नमस्कार करते हैं।

इसी परिवार में 40–50 वर्षों से क्रेसर का धंधा चल रहा था। जहां यह धंधा चल रहा था,उसके पास ही एक सरकारी अफसर रहने लग गया, वह उस जमीन को हड़पने की कोशिश करने लगा। इस चिन्ता से सतीश के बड़े भाई रमेशजी काफी परेशान थे। पूरे घर वाले चिन्तित थे। एक दिन रमेशजी व्याख्यान के बाद नजदीक आए, उन्हें उदास देख साध्वीश्री ने पूछा– क्या बात है, रमेश जी! इतने उदास क्यों रहने लगे हो?उन्होंने सारी स्थिति अवगत कराई। साध्वी श्री ने कहा– आप मानसिक शांति के लिए ''ऊँ भिक्षु–जय भिक्षु'' की प्रतिदिन तेरह माला व शुक्ला त्रयोदशी का उपवास शुरू कर दो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कुछ ही दिनों में वह मामला स्वतः ही सुलझ गया। उनका कहना था– चाहें हम स्थानक वासी परम्परा से है पर, अब हमारी श्रद्धा तेरापंथ पर घनीभूत हो गई है। अब वे प्रतिदिन दुकान में प्रवेश से पहले ''ऊँ भिक्षु–जय भिक्षु'' की माला फेरने लगे।

ओबरा में पहला चौमासा। कुल 9 हरियाणा वालों के तेरापंथी घर थे। अन्य अनेक घर थे। घर–घर में एक ही चर्चा– ''साध्वी जी द्वारा प्रदत्त मंत्र चामत्कारिक है।

वस्तुतः श्रद्धा का बल विलक्षण होता है।

उस समय गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शनार्थ गए ओबरावासियों ने सारी स्थिति निवेदन की। जब साध्वीश्री फूलकुमारी जी गुरुदेव के दर्शन किए तब गुरुदेव श्री ने पूछा– तुम्हारा वो मंत्र कौन सा है, जिससे इतने चमत्कार हुए। साध्वीश्री ने विनम्र स्वरों में कहा– यह सब गुरुमंत्र का ही चमत्कार है। मेरे पास कुछ नहीं था।

इस प्रकार और भी ऐसे उदाहरण हैं, जो आध्यात्मिक चिकित्सा से जुड़े हुए हैं।

हम सहवर्ती साध्वियों के लिए भी साध्वी श्री की मंत्र साधना चिकित्सा का काम करती थीं। जब–जब हम आधि–व्याधि से प्रभावित होते, साध्वी श्री मंत्र सुनाते, शीघ्र ही हम स्वस्थ हो जातीं। पूज्य गुरुकृपा व साध्वीश्री की मंत्र साधना का प्रभाव प्रायः डॉक्टरी चिकित्सा से हम साध्वियों का बचाव हो जाता था।

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान परमश्रद्धास्पद गुरुदेव श्री तुलसी के मंगल आशीर्वाद से साध्वीश्री फूलकुमारी जी जहां भी पहुंचे वहां प्रेक्षासाहित्य और प्रेक्षाध्यान की परिचर्चा ही नहीं, उसके प्रयोग भी करवाते। क्योंकि साध्वीश्री की ध्यान में अच्छी रूचि थी।

उन्हीं प्रेक्षाध्यान के प्रयोक्ताओं के चयनित अनुभवः– भट्ठा बाजार के बाल लाइब्रेरी में प्रथम जैन साध्वियों का 500 न्यायाधीश और वकीलों के मध्य प्रोग्राम। साध्वीश्री ने ''तनाव मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय : प्रेक्षाध्यान'' के संदर्भ में विचारो की प्रस्तुति दी। सुनकर सब भाव–विभोर बन रहे थे। क्योंकि आध्यात्मिक प्रवचन श्रवण का वह अभूतपूर्व प्रथम अवसर था। वहां के अध्यक्षश्री बाबू वकील ने कहा– यह जीवन का स्वर्णिम व प्रथम दिन है– चम्पालाल जी नाहर की वजह हमें आज ऐसे जीवन्त धर्म की बातें सुनने को मिली। हम आचार्य तुलसी के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने सुदूरवर्ती प्रदेश में अपनी शिष्याओं को भेजा। प्रतिदिन बुद्धिजीवि प्रेक्षाध्यान करने हेतु उपस्थित होते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

1. प्रेक्षा एक मेडिशन- डॉ. सत्येन्द्र अपनी मन की व्यथा लेकर साध्वीश्री के पास पहुंचा। कहा– मैं तनाव व डिप्रेशन में रहता हूं, आप मुझे कुछ प्रयोग बताएं। साध्वीश्री ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग बताते हुए, नियमित करने की प्रेरणा दी। कुछ दिन बाद उन्होंने कहा– साध्वी जी! आपने मुझे दीर्घ श्वास प्रेक्षा की ऐसी औषधि दी, जिससे मेरा टेन्शन तो समाप्त हुआ ही, साथ ही– मेरे हार्ट में जो दर्द रहता था वह भी गायब हो गया। वैसे तो मैं डॉक्टर हूं पर मेरे डॉक्टर आप बन गए।

2. 76 बसन्त व्यर्थ ही गए- डॉक्टर सत्यनारायण अपने मित्र डॉ. सत्येन्द्र की प्रेरणा से आए। उन्होंने प्रेक्षाध्यान की परिचर्चा ही नहीं अपितु उसके प्रयोग भी किए। साध्वीश्री से प्रभावित होकर उन्होंने कहा– ''पता नहीं, मेरे गुरुजी ने यह कैसे बताया कि ''हस्तिनाताड्य मानेऽपि न गच्छेत् जैन मंदिरं''। मुझे बहुत खेद है कि मेरे जीवन के 76 बसन्त व्यर्थ ही चले गए।

3. छातापुर में प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं चलती। उसमें एक तेरह वर्षीय बालक राजेश रोज सम्मिलित होता। एक दिन साध्वीश्री ने उसका परिचय पूछा– राजेश ने कहा– मैं हरिजन लड़का हूं, पर मेरा परिवार शिक्षित है। साध्वीश्री– क्या खान–पान शुद्ध है! राजेश– नहीं! मेरे मन में आता है– मैं भी आप जैसा बन जाऊं। साध्वीश्री की प्रेरणा पाकर आजीवन मांस–अण्डे का प्रत्याख्यान कर दिया।

जिसका सारा परिवार मांसाहारी, वह अकेला निरामिष कैसे रह पाए?यह विकट समस्या उसके समक्ष आ गई। घर में तनाव रहने लगा। अभिभावकों ने कहा– हम तुझे अलग रोटी बनाकर नहीं देगे। रोटी के लिए पैसे भी नहीं देंगे, बोल अब क्या करेगा?उस बच्चे ने परिवारिक जनों के इस रवैये का जवाब दिया– ''आप चिंता न करें, मैं स्वयं कमाऊंगा, अपनी रोटी खाऊंगा पर प्रण नहीं तोडूंगा।''

दूसरे दिन से साध्वीश्री से मंगलपाठ श्रवण कर ध्यान करने के बाद 5–7 बच्चों को पढ़ाने लगा। पैसे कमाने शुरू कर दिए, कभी कच्ची कभी पक्की रोटी बना खा लेता। कभी भूखा ही सो जाता। राजेश का मानना था– साध्वीश्री की प्रेरणा से व प्रेक्षाध्यान के प्रभाव से ही मैं इतना दृढ़ रह सका। सचमुच यह एक आश्चर्यकारी घटना है, एक तेरह वर्षीय बालक भूखा रह सकता है पर प्रण नहीं तोड़ सकता।

जब कभी ध्यान में कोई कठिनाई पैदा होती वह नदी के उस पार प्रतापगंज हमारे पास अपनी जिज्ञासा समाहित करने पहुंच जाता।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक दिन वह कहता है– साध्वीश्री! आज रास्ते में चलते समय मुझे एक अति भयावह विशालकाय छाया दिखाई दी। मानों मेरे ऊपर आक्रमण करने वाली है। लेकिन, मैं घबराया नहीं, वहीं आंख बन्दकर दीर्घश्वास प्रेक्षा का प्रयोग शुरू कर दिया। कुछ ही क्षणों बाद वह आकृति वहीं विलीन हो गई।

4. जीवन की दिशा बदल गई- मिर्जापुर में तीन दिवसीय, प्रथम बार जेल में साध्वीश्री का प्रोग्राम रखा गया। तीन सौ कैदियों के बीच प्रवचन करने के पश्चात् साध्वीश्री स्वयं उन्हें प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवातीं। अच्छे इन्सान बनने के गुर सिखातीं। साध्वीश्री के प्रेरक प्रवचनों से तथा ध्यान के विभिन्न प्रयोगों से उस यातनागृह में भी कई कैदियों को आत्मशांति का अनुभव हुआ।

उसी जेल के एक कैदी युवक, जिसके सौम्य चेहरे, रहन–सहन को देखकर साध्वीश्री ने पूछा– तुमने ऐसा कौन सा अपराध किया, जो इन सलाखों में बन्द हो?उसने सत्य को उद्घाटित करते हुए कहा– अपराध तो हर किसी से भी हो सकता है, मगर जिसका अपराध पकड़ में आ जाता है, उसे अपराधी घोषित कर दिया जाता है। मैंने एक चुनाव लड़ा था, पर मैं उसमें पराजित हो गया था, जिससे मन में भयंकर आक्रोश पैदा हो गया। क्रोध के तीव्र ताप में एक–एक कर पच्चीस व्यक्तियों का अपने हाथों से कत्ल कर दिया।

साध्वीश्री जी! इन तीन दिनों में आप द्वारा करवाए गए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग ने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री फूलकुमारी जी के जीवन के कुछ प्रेरक बिन्दु

- मेरा सम्यक्त्व निर्मल रहे।
- मेरा चारित्र पवित्र–पवित्रतम हो।
- मैं हर पल अप्रमत्तता का जीवन जीती रहूं।
- मैं जप, स्वाध्याय, ध्यानादि का आनंद पाती रहूं।
- मैं यथासंभव आलोचना से बचती रहूं।
- मैं क्षांति, मुक्ति आदि दस धर्मों की हर क्षण आराधना करती रहूं।
- मैं समत्व की साधना में लीन रहूं।
- मैं हरक्षण समय का सदुपयोग करती रहूं।
- मैं सिद्धों का जप अधिकाधिक करती रहूं।
- मेरे मैत्री, प्रमोद, कारूण्य और मध्यस्थ भावना का विकास होता रहे।
- मुझे सलक्ष्य भव–परम्परा कम करनी है।
- मुझे उपशान्त कषाय की साधना करनी है।
- मुझे अनाग्रह की विशेष साधना करनी है।
- मुझे पंचनिष्ठा का प्राणार्पण से पालन करना है।
- मुझे प्रतिदिन श्वास की एक माला फेरनी है।
- मुझे प्रतिदिन आगम स्वाध्याय करना है।
- मुझे अनावश्यक बालेकर शक्ति खर्च नहीं करनी है।
- मुझे निंदा व प्रशंसा में सम रहना है।
- मुझे सबके साथ समानता का व्यवहार करना है।
- मुझे नौ द्रव्यों से अधिक यथासंभव नहीं खाना है।
- मुझे यथासंभव पांच विगय वर्जन करना।
- कल्याणमित्र की तरह मेरा यह शरीर साधना में सहयोगी रहे– यह मेरी अन्तर कामना है।
- मैं अंत में अनशन की आराधना कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करूं।
- पूज्य गुरुदेव श्री के पवित्र आभामण्डल से मैं ज्योतिर्मय–चिन्मय बनूं– यह मेरी अन्तर अभीप्सा है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन संध्या के चार वर्ष

शासन श्री साध्वी फूलकुमारी जी जीवन के 81वें बसन्त तक पूज्यवरों की अनुज्ञा से यात्रायित जीवन जीती रहीं। जिस शिष्य को गुरुकृपा उपलब्ध होती है वह शिष्य कृतपुण्य बन जाता है। साध्वीश्री परम सौभाग्य शालिनी थीं जिन्हें तीन–तीन गुरुओं के शासन–काल में साधना करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के शासनकाल में दीक्षा लेकर प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी तथा युवामनस्वी, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में संयम–साधना को आगे बढ़ाते रहें। तीन–तीन साध्वी प्रमुखा श्री का शासन काल साध्वी श्री ने अपनी नजरों से निहारा। गुरु निष्ठा रोम–रोम रमी हुई थीं। साध्वी श्री मानते थे, आज मैं जो कुछ भी हूं गुरुकृपा का ही प्रभाव है। जब–जब पूज्यवरों के संवाद बहिर्विहार में मिलते भाव–विभोर बन जाती। साध्वी प्रमुखाश्री जी के प्रति भी मन में अनन्य भक्ति भावना थी। प्रायः स्वस्थता का जीवन जीया, जिसका राज था, व्यवस्थित जीवन शैली तथा निरन्तर योगाभ्यास।

82वें वर्ष के बाद सरवाइकल व साइटिका का निरन्तर दर्दरहने लगा तथा बी.पी.एच. भी रहने लगे। अस्वस्थता व अवस्था के कारण विहार करने में कठिनाई की अनुभूति होने लगी।

सन् 2011, राजलदेसर मार्यादोत्सव के पश्चात् पूज्यवर की अनुज्ञा प्राप्त कर कालू (बीकानेर) पधार गए। कालू बहुत ही साताकारी क्षेत्र था, क्योंकि सर्दी–गर्मी आदि में स्थान की दृष्टि से बहुत अनुकूलता थी। श्रावक– श्राविकाएं जागरूक, श्रद्धाशील व शासन भक्त हैं। उनके दीर्घकालिक प्रवास के दौरान कालू में अच्छी जागृति आई। महिलामण्डल, कन्यामण्डल, ज्ञानशाला आदि ने भी प्रवास का पूरा लाभ उठाया। तपस्याओं का भी अच्छा क्रम चला।

सन 2014, तुलसीजन्म शताब्दी का सुपावन अवसर। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर का लाडनूं चातुर्मास। हार्दिक तमन्ना होते हुए भी साध्वी श्री फूलकुमारी शारीरिक अस्वस्थता के कारण अपनी जन्मभूमि पर नहीं जा सकीं। इसकी पीड़ा अन्तर दिल में थी। वे कई बार कहतीं– ''मैं अपनी जन्मभूमि–लाडनूं तो नहीं जा सकी पर, अब तुम लोग यदि हिम्मत करो तो मेरी गंगाशहर मर्यादा–महोत्सव के अवसर पर जाने की इच्छा है। परम पूज्य गुरुदेव श्री सुदूर–यात्रा पर पधार रहे हैं पूज्यवरों के सेवा व सन्निधि का यही अवसर है। साथ–साथ पूरे धर्म–संघ से मिलना भी हो जाएगा। यदि अभी नहीं गए तो फिर जिन्दगी में दर्शन असंभव है।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी अन्तर दिल की मनोभावना श्री चरणों में निवेदन करवाई। गुरुदेव श्री की अनुज्ञा प्राप्त हो गई। चिरसंजोये स्वप्न को फलित होते देख हर्षाप्लावित हो गईं।

मनोबल के साथ साध्वीश्री फूलकुमारी जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ कालू से गंगाशहर की ओर प्रस्थान किया। तीन साल की अवधि के बाद पूज्य गुरुदेव श्री व मातृहृदया साध्वी प्रमुखा श्री के पावन दर्शन कर निहाल हो गईं। रोम–रोम हर्षित–पुलकित था। अन्तर मन में खुशियों का ज्वार उमड़ रहा था। सारी थकान काफूर हो गई। वे ऐसा अनुभव कर रही थीं– आज मैं मालोमाल बन गई। मैंने गंगास्नान कर लिया। पूरे धर्मसंघ से मिलकर मैं कृतपुण्य बन गईं।

मुमुक्षु की सटीक पहचान– पापभीरूता। जो पापभीरू नहीं होता वह मुमुक्षु भी नहीं होता। शासनश्री साध्वी फूलकुमारी पापभीरू व वैराग्यवान साध्वी थीं। वे अपनी साधना और संयम की आराधना के प्रति पूर्व जागरूक थीं।

संयम जीवन के स्वीकरण के बाद कभी–कभी छद्मस्थतावश जान–अनजान में दोष लगने की संभावना बनी रहती है। संयमी साधक उन कृत दोषों का गुरु मुखरविन्द से प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध बनने का प्रयास करता है।

साध्वी श्री भी इसके प्रति सजग थीं। समय–समय पर गुरुदेव से आलोयणा कर निशल्य बनने का प्रयास करती। गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के समय अपने 71 वर्षीय संयम जीवन की आलोचना प्रदान करने हेतु अपनी लिखित भावना श्री चरणों में मेरे साथ निवेदन करवाई। प्रायश्चित प्राप्त कर प्रसन्नता व आत्मतोष की अनुभूति हुई।

उस दुर्लभ अवसर की प्राप्ति के बाद गुरुदेव श्री के निर्देशानुसार अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ पुनः कालू पधार गए।

अब वे अपनी साधना के प्रति और अधिक जागरूक बन गईं। हर क्षण का सदुपयोग करती हुई, जप–स्वाध्याय–ध्यान–कायोत्सर्ग में तल्लीन रहती। सलक्ष्य आगम स्वाध्याय करती।

'ऊँ–ह्रीं–नमः तथा सिद्धों के अनवरत जप में इतनी एकाग्रचित्त बन जाती कि देखने वाले भाव–विभोर बन जाते।

86वें वर्ष में भी साध्वी श्री के जीवन रूपी उद्यान में ''खणं जाणाहि पंडिए'' आगमोक्तिचारितार्थ'' हो रही थीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वाध्याय के प्रति गहरा रूझान था। आंखों में टेंशन के कारण इन महीनों में स्वयं स्वाध्याय कमकर पाते, मेरे द्वारा व अन्य साध्वियों द्वारा कुछ न कुछ सुनते रहते। यदि पूरे दिन भी उनको स्वाध्याय कराते तो वे थकते नहीं। इस ढ़लती वय में भी विश्राम करना पसन्द नहीं था। जब भी मन होता गीत बनाने लगते। श्री तुलसी, महाप्रज्ञ व आचार्यश्री महाश्रमण जी के गीतों के साथ ही औपदेशिक गीत भी बनाएं। अनेक गीत सिद्ध–स्तुति पर भी लिखें। जिनमें से एक सर्वाधिक प्रिय गीत जिसे अपनी मस्ती में गुनगुनाते तब भाव–विभोर बन जाते, ऐसा लगता मनरूपी वीणा के तार सिद्धों से जुड़ रहे हैं, उस गीत को दो पंक्तियां–

''करें हम वन्दना सिद्धों को शतबार है,

तरें हम संसार पारावार है।।''

गीत रचनाओं के क्रम में साध्वी श्री की यह आखिरी रचना थी, ऐसा लगता है अहसास हो गया कि अब अतिशीघ्र ही लक्षित–मंजिल का वरण करूंगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संथारे के अनमोल क्षण

सन् 2015, फरवरी माह का लगभग अन्तिम सप्ताह साध्वी श्री सर्दी–खांसी के प्रकोप से प्रभावित हो गईं। अनेक घरेलू उपचार किए गए पर, असर नहीं हुआ। तब स्थानीय स्तर पर अंग्रेजी दवा शुरू की, उसकी भी कोई निष्पत्ति सामने नहीं आई। इस बीच कई बार कहते– ''बाई! लागै आ खांसी लेर ही जासी।'' जब कभी हम साध्वियां किसी चीज के लिए निवेदन करते तब फरमाते– ''म्हारै अब कांई करणो है। इयां लागै अब गुरुदेव रा दर्शन कोनी हुवै। थै म्हांरी लिख्योड़ी भावना गुरुदेव व महाराज ने जरूर निवेदन कर दीज्यो।''

इस आधार से पुष्ट होता है– कुछ–कुछ अहसास पहले से ही होने लग गया था।

5 मार्च 2015 प्रातः से ही वे कुछ अजीब सी बेचैनी महसूस कर रहीं थीं। दोपहर तक ऐसा लगा मानों नींद में है। हम साध्वियों ने सोचा– साध्वीश्री की स्थिति ठीक नहीं लग रही है अतः यदि लाडनूं से डॉक्टर घोड़ावत दर्शन कर ले तो अच्छा रहेगा। ज्ञातव्य रहे– डॉक्टर विजय घोड़ावत श्री महालचन्द जी– मांगी बाई– बीदासर के सुपुत्र हैं, तथा साध्वी श्री के संसारपक्षीय बड़े भाई पूनमचन्द जी का दोहिता है।

तत्काल श्रावकों द्वारा इंदौर थानमल बैंगानी व दिल्ली इन्द्र को समाचार करवाए तथा डॉक्टर साहब से भी सम्पर्क किया गया।

जैसे ही डॉ. घोड़ावत के पास सूचना पहुंची कि ''नानी सा महाराज के ठीक नहीं है''। तत्काल कालू आने का प्रोग्राम बना लिया। रात्रि में लगभग 8.15 बजे डॉ. कालू पहुंचे। आते ही पूछा– बी.पी. चैक किया क्या?साध्वियों ने कहा– नहीं। तत्काल बी.पी. की जांच की। देखा बहुत अधिक है तथा उसका असर मस्तिष्क पर हुआ है। डॉक्टर साहब का कहना था– साध्वीश्री सेमी कोमा में हैं। दायां अंग हल्के पेरालाइसेस से प्रभावित है। तत्काल ईलाज शुरू करने की सलाह दी पर जैसा कि साध्वीश्री ने पहले से ही कह रखा था– ''मंगलप्रभा! तुम ध्यान रखना, कभी मेरी सीरियस हालत भी हो जाए तो मनोबल रखना, हालांकि इस मायने में तुम बहुत कमजोर हो। फिर भी मेरे साधुत्व में किसी प्रकार का दोष मत लगने देना व मुझे वाहन आदि से कहीं मत ले जाना। संथारे बिना मत जाने देना। समप्रभा! तुम भी पक्की रहना।''

इस बात को ध्यान में रखते हुए पूरी रात साध्वियां जप सुनाती रहीं। दूसरे दिन सुबह से ही डॉ. घोड़ावत के निर्देशानुसार रवीन्द्र जी नाहटा की देख–रेख

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में उपचार शुरू किया गया। स्थिति की सारी अवगति गुरुदेव श्री को निवेदन करवाई गई। डॉक्टर साहब ने 72 घंटे का समय दिया।

पूज्यप्रवर ने साध्वीश्री के नाम अनमोल सन्देश दिलवाया। महाश्रमणीवरा का भी संदेश प्राप्त हुआ।

दो दिन में ही उपचार कारगर होने लगा। बी.पी कंट्रोल हो गए। सेमी कोमा से भी बाहर हो गए। पेरालाइसेस भी ठीक हो गया। बोलने लगे– हम सभी प्रसन्न चित्त थे–साध्वीश्री जल्दी ठीक हो जाएंगे पारिवारिक जन भी पहुंच गए थे। 72 घंटे होते ही पुनः बी.पी. का अटेक आया, जिसका असर मस्तिष्क पर हुआ। उस समय ऐसा लगा अब साध्वी श्री एक–दो क्षण हमारे बीच हैं। उस घोर वेदना में भी मुंह से उफ तक नहीं निकला। चारों ओर शरण सूत्र का उच्चारण होने लगा। वे शांत भाव से सौम्यमुद्रा में लेटी रहीं। देखने वाले आश्चर्यचकित थे। श्रद्धा से प्रणत थे। पारिवारिकजन सामने खड़े थे। कालू के श्रावक–श्राविकाओं से हॉल खचाखच भरा हुआ था। सभी का एक ही स्वर– साध्वी श्री! संथारे के बिना न चले जाए। तत्काल भाई इन्द्र ने गुरुदेव श्री को सारी स्थिति की जानकारी देते हुए संथारे की आज्ञा मंगवाई। आचार्यप्रवर ने संदेश के साथ संथारे की अनुज्ञा प्रदान करवाई। साध्वीश्री को संथारे के लिए पूछा गया। ईशारे से स्वीकृति प्रदान की।

साधु जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है– संथारे के साथ समाधि–मृत्यु की प्राप्ति। ऐसा अवसर भाग्यशाली को ही मिलता है। इस दृष्टि से साध्वी श्री बहुत भाग्यशालिनी थीं।

सभी साध्वियों की प्रेरणा से मैंने अपने मनोबल को मजबूत कर गुरुदेव श्री की आज्ञा तथा अनंत सिद्धों की व सबकी साक्षी से साध्वी श्री को यावज्जीवन तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करा दिया। वह दिन था– उनके दीक्षा– गुरु आचार्य श्री तुलसी की मासिक पुण्य तिथि तीज, मंगलवार व राजयोग।

त्याग-तप का चमत्कार हमने अपनी आंखों से देखा, संथारे का प्रत्याख्यान करते ही वे कायोत्सर्ग की मुद्रा में लेट गए। कुछ ही क्षणों के बाद ही साध्वी श्री स्वस्थता की अनुभूति करने लगे। भाव श्रेणी प्रवर्धमान थी। चेहरे पर अद्‌भुत सौम्यता झलक रही थी। भाव–विभोर होते हुए तत्काल बद्धांजलि पूर्वक गुरुदेव श्री के प्रति कृतज्ञता की भाषा में कहा– ''आज गुरुदेव श्री ने संथारे की आज्ञा प्रदान कर मुझे निहाल कर दिया। मेरी नैय्या पार लगा दी।'' सभी सतियों से क्षमायाचना करते हुए, श्रावक समाज व न्यातीलों से तथा चौरासी लाख जीवायोनि से खमत–खामणा किए। उच्च स्वर में कहा– ''मुझे अब किसी से मोह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं है, इस शरीर से भी मोह नहीं है। मौत का कोई डर नहीं है। मैं पूर्ण जागरूक हूं। आज मेरा चिरपालित स्वप्न साकार हुआ है। मुझे संघ का शरणा है।''

चारों ओर हर जुबान पर साध्वीश्री की गुणगाथा के बोल सुनाई दे रहे थे। संथारे के विलक्षण क्षणों को देख सभी आनंद में सराबोर हो रहे थे।

साध्वी श्री जी का चेहरा अभिनव आभा से दमक रहा था। वे आनंद के सागर में हिलोरें ले रही थीं। मधुर मुस्कान से वदन व आंखें आत्मतोष का अनुभव कर रही थीं। वे अपने अंतिम लक्ष्य की संपूर्ति से जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रही थीं।

संथारे की खबर विद्युत वेग की तरह तत्काल चारों ओर पहुंच गई। कालू में संथारे का पहला अवसर था। दर्शनार्थियों का तांता लग गया। सुदूर क्षेत्रों से श्रद्धालु संथारे के दुर्लभतम अवसर पर पहुंचने लगे। जब कोई व्यक्ति दर्शन करने आता और उन्हें कहा जाता तो आंखे खोल नाम लेकर हाथ ऊपर कर जिकारा देतीं।

साध्वीश्री के चेहरे पर झलकने वाली तेजस्विता दर्शकों को स्वतः ही अपनी ओर खींच रही थी। जैन धर्म में व्याख्यायित मृत्यु की इस अद्‌भुत कला का साक्षात् निदर्शन पाकर जैनेतर लोग भी प्रभावित हो रहे थे। पूरे बीकानेर चोखले में तेरापंथ धर्म की अच्छी प्रभावना हुई।

साध्वी श्री फूलकुमारी जी की अन्तश्चेता पूर्ण जागृत थी। हर व्यक्ति के प्रति उनकी आत्मीयता थी पर रागात्मक भाव से वह सर्वथा दूर थी। सजगता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी तथा वे पल–पल को सार्थक कर रही थीं। इर्द–गिर्द चारों तरफ जप की ध्वनि ध्वनित रहती थी। श्रावक–श्राविकाओं का उत्साह प्रवर्धमान था। कई भाई तो अपने बिजनेस बन्द करके साध्वी श्री की उपासना में ही रहते।

कालू व समीपवर्ती क्षेत्र लूणकरणसर तो मानो एकाकार बन गया।

सहवर्ती साध्वियों द्वारा अहर्निश चौबीसी, आराधना, आत्मचिन्तनपरक गीत तथा जप सुनाया जाता, जिससे उनकी चिन्तन धारा वैराग्य रस से ओत : प्रोत हो रही थी। मैंने दसवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन के आधार पर एक–एक महाव्रत की आलोचना करवाई। जब आराधना की पहली गीतिका सुनाते तब वे पूरी सजगता के साथ भिच्छामि–दुक्कडं बोलते।

अनशन काल में परमश्रद्धेय महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी तथा मातृहृदया साध्वी प्रमुखाश्री जी के मंगल सन्देश निरन्तर मिल रहे थे, जो हम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वियों के मनोबल को बढ़ाने में तथा साध्वी श्री के परिणामों में संजीवनी का काम कर रहे थे।

साध्वी श्री में कृतज्ञता के भाव कूट–कूट कर भरे थे। एक–एक का नाम लेकर अहोभाव प्रकट करते। कितनी बार कहते– गुरुदेव ने मुझे निहाल कर दिया। साध्वी प्रमुखा श्री के प्रति कितनी बार कृतज्ञता ज्ञापित की। सहवर्ती एक–एक साध्वी को स्नेह पूरित नेत्रों से देखते हुए सिर पर हाथ फेरा व अमूल्य शिक्षाएं दीं। पंचनिष्ठा का नामोल्लेख करते हुए सबको संकल्प करवाए।

केवल साध्वियों को ही नहीं, अपने संसारपक्षीय ज्ञातिजनों व कालूवासियों को भी यथायोग्य शिक्षाएं देते हुए कहा– देव–गुरु–धर्म पर दृढ़ आस्था रखना। इन्द्र को विशेष रूप से धर्म व कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। बैंगानी परिवार की चार पीढ़ियां संथारे के समय एक साथ उपस्थित थी। दिन–रात सभा भवन में मेला सा लगा रहता। उस समय कालूवासियों ने जो व्यवस्था की वह उल्लेखनीय है।

पूरे धर्मसंघ की शुभकामनाएं साध्वीश्री के साथ थी। दूरस्थ साधु–साध्वियों के मंगल संदेश निरनतर मिल रहे थे। जिन्हें संकलित करने में श्रीमति सरोजसेठिया– जो साध्वीश्री को अपने परम उपकारी मानती है तथा रेणु व रचना का श्रम सराहनीय रहा।

11 मार्च, दोपहर का समय। अचानक उच्च स्वर में बोले– ''आज मेंरे विशिष्ट ज्ञान का स्रोत खुल गया है। मेरी अतीन्द्रिय चेतना जागृत हो गई है।''

मैंने निवेदन किया– साध्वीश्री! आप ऐसा फरमायें मेरी अतीन्द्रिय चेतना जागृत हो रही है। हमें निश्चयकारिणी भाषा नहीं बोलनी है।

तत्काल आपने फरमाया– नहीं बाई! हो गई है।

मैंने पूछा– क्या आपको कोई ज्ञान हुआ है?

साध्वीश्री– हां, गुरुदेव की कृपा से।

मैंने पूछा– क्या जाति स्मृति ज्ञान हुआ है?

साध्वीश्री– नहीं।

पुनः पूछा– क्या अवधि ज्ञान हुआ है?

साध्वीश्री– हां, गुरु कृपा से।

मैंने पुनः पूछा– साध्वीश्री! आप यहां से कौन से देवलोक में जाएगें?

साध्वी श्री– पांचवे में। गुरुदेव की कृपा से।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैंने– संथारा कितने दिन का आएगा?

साध्वी श्री– क्यों?तुम्हारे जल्दी है क्या?

साध्वियां– नहीं। हम तो जानकारी के लिए पूछ रहे हैं।

तब कहा– ''9वें दिन दोपहर में देख लेना। अन्तिम समय तक जागृत अवस्था में रहूंगी।'' गुरुदेव श्री की नेपाल यात्रा के बारे में पूछा तो कहा– आचार्य श्री महायशस्वी आचार्य हैं पर नेपाल में प्राकृतिक–आपदा आएगी। संघ के कोई आंच नहीं आएगी।

साध्वियों ने पूछा– क्या आपदा आएगी?

साध्वीश्री– तुम लोग सुन लेना।

पित्त का वेग ज्यादा बढ़ने की वजह से स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाते फिर भी अपनी शक्ति नियोजित कर कुछ बताते और भी अनेक बातें बताईं। इस बीच साध्वी श्री कभी–कभी देवों के पूर्व नाम लेकर, हाथ उठाकर जिकारा देते व इशारे से बात करते। हम पूछते– साध्वीश्री! किससे बात कर रहे हैं? तब कहते– देखो सामने वो खड़े हैं। मुनि श्री हुलास मलजी, साध्वी श्री खूमां जी, साध्वी श्री मोहनां जी, सध्वी री रत्नवतीजी आदि। गुरुदेव श्री तुलसी ने भी दर्शन दिए।

इससे स्पष्ट होता है कि उनके हितैषी देव भी दर्शनार्थ आते थे।

14 मार्च, रात्रि लगभग दो बजे से प्रातः ग्यारह बजे तक साध्वी श्री कायोत्सर्ग में रहे। जैसे ही कायोत्सर्ग संपन्न हुआ, उन्होंने कहा– आज गुरुकृपा से मैं महाविदेह क्षेत्र में।

हमने पूछा– साध्वी श्री! वहां किसको देखा?

साध्वीश्री– सीमंधर स्वामी को।

साध्वियों ने पूछा– क्या प्रवचन सुना?

साध्वी श्री– हां।

साध्वियों ने पुनः पूछा– प्रवचन का विषय क्या था?

साध्वीश्री– महावीर.....

इससे आगे भी कुछ और बोलना चाहते थे पर, कमजोरी के कारण स्पष्ट बोल नहीं पाए।

अन्तिम समय तक साध्वीश्री की जागरूकता देखकर हमें आश्चर्य होता था।

16 मार्च 2015 का पावन प्रभात, प्रेक्षाप्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की मासिक पुण्य तिथि– एकादशी। कुमार योग। शासनश्री साध्वी फूलकुमारी जी के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लिए मंगलमय बनकर आया। उस दिन प्रातः ही कह दिया– ''मेरा स्थान खाली होने वाला है, हम सभी और अधिक जागरूक बन गए थे। अनवरत जप चल रहा था। 11 मार्च से अन्तिम समय तक अवधिज्ञान जाता–जाता रहा।

वातावरण में शांति व समता का साम्राज्य छा गया। सभी की निगाहें शांति की प्रतिमूर्ति पर केन्द्रित थी। दिल–दिमाग में एक अजीब सी दहशत, एक अजीब सी धड़कन थी। न जाने किस क्षण क्या हो जायें, किसी का उस तपस्विनी के उपपात से उठने का मन ही नहीं हो रहा था। शांत चेहरा, अकम्पित हाथ–पैर मानो पादोपगमन संथारे में लेटी हों।

घड़ी ने ज्योंहि 1.25 की सूचना दी, भीनी–भीनी गुलाब की सुगन्ध चारों फैल गई, जिसका अनुभव सभी ने किया। साध्वीश्री का ललाट (दर्शन केन्द्र) गहरे प्रकाश–पुंज से प्रकाशित हो गया व दोनों आंखें खुल गई। वहां पर उपस्थित लोगों ने यह दृश्य अपनी आंखों से देखा। सबके देखते–देखते शासन श्री साध्वी फूलकुमारी जी देह से विदेह बन गई। नौ दिवसीय प्रभावी संथारे के साथ उन्होंने सबको अलविदा कह दिया। वह दिव्यात्मा पार्थिव शरीर को छोड़ उर्ध्व लोक में जाकर अवस्थित हो गई। कुछ क्षणों के लिए वातावरण शान्त–प्रशांत और निस्तब्ध हो गया। सारी हलचल खामोशी में बदल गई। प्रकृति का कण–कण मानों उस समाधिस्थ आत्मा को अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा था।

''यों तो सभी मरण के राही हैं, एक रोज मर जाते हैं।

किन्तु धन्य वे हैं जो, मरकर भी नाम अमर कर जाते हैं।

लगभग पैंतीस मिनट बाद भारी मन से पार्थिव शरीर को नया परिधान पहनाया। चेहरा चमक रहा था। ऐसा लग रहा था मानों अभी बोलने वाले ही हैं। पर हंसा उड़ चुका था। वह मेरी परीक्षा का समय था। जिनके सान्निध्य में निकटता से पैंतीस वर्ष से अधिक रही उनकी देह को आज वोसिराना। अपने द्वारा अपनों का विसर्जन करना बहुत कठिन होता है। आखिर न चाहते हुए भी भारी मन से उनके जीवन की गुण–गाथा गाते हुए सबकी उपस्थिति में शरीर को वोसिराया। उस समय का दृश्य इतना गमगीन बन गया सब भावुक हो उठे।

कालू के प्रमुख श्रावकों ने व ज्ञातिजनों ने गहरे आस्थाभाव से उस विलक्षण आत्मा की देह को अपने हाथों से उठाया। सभा भवन के बीचोबीच पट्ट पर आसीन किया। साटन के श्वेत वस्त्र से पूरे शरीर को आवेष्टित किया गया। अब केवल गौरवर्ण वदन चमक रहा था। चारों ओर अगरबत्तियों की खुशबू से पूरा परिसर महक उठा। अन्तिम दर्शन हेतु जन–सैलाब उमड़ पड़ा। पूरी रात संगीत व जप की स्वर–लहरियों से ऐसा अहसास हो रहा था मानों नींद को आने का रास्ता ही नहीं मिल रहा हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बैकुण्ठी तैयार होने लगी। दूसरे दिन सभी पारिवारिक सदस्यों ने व श्रावक समाज ने प्रणाम कर 10.15 पर उस महनीय काया को बैकुण्ठी में बैठाया। जयघोषों से व ''जय बालो फूल सतिवर की....'' गीत से पूरा भवन गूंज उठा। साध्वियों ने नम आंखों से विदा का गीत गाया। अत्यन्त भारी मन से मंगलपाठ सुनाया। जनता के उमड़ते सैलाब के साथ शासन श्री साध्वी फूलकुमारी जी प्रत्यक्ष रूप से हम सबसे दूर हो गए। इस अवसर पर करीब 21 क्षेत्रों के श्रद्धालु उपस्थित थे। साध्वी श्री की अन्तिम यात्रा व्यवस्थित रूप से लगभग 3.5 घंटे तक कालू की एक–एक गलियों से गुजरती हुई खेड़ी पहुंची जहां साध्वी श्री का दाह–संस्कार होना था।

अनेक व्यक्तियों ने सजल नेत्रों से पार्थिव देह को नारियल चढ़ाएं। जयघोषों के साथ बैकुण्ठी चिता पर रखी गई। साध्वी श्री जी के संसारपक्षीय भतीजे व पोतों ने मुखाग्नि दी। (कमलजी, नरपतजी, थानमलजी, राजेन्द्र, इन्द्र, धर्मेश व श्रीचंदजी बरमेचा।)

दूसरे दिन स्मृति सभा में सैकड़ों लोगों ने उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजली समर्पित की।

''मर्त्यलोक से चली गई तुम,
गुण सुरभि से अवनीतल सुरभित।
मृदुभाषिणी तव चरणों में,
करती सादर श्रद्धांजलियां अर्पित।।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पूज्यवरों के प्रेरक सन्देश

अर्हम्

शिष्या फूलकुमारी जी!

अभी फारबिसगंज में चातुर्मास बिता रही हो। साध्वियों का स्वास्थ्य तो ठीक–ठाक ही है। पर मानसिक उत्साह बहुत अच्छा रहा, ऐसा लगता है। वहां के कार्यों की जैसी रिपोर्ट हमको मिल रही है, बहुत उत्साह वर्धक है। डाकुओं को, चोरों को अच्छे आदमी बना देना, यह उल्लेखनीय बात है। और जैनेतर लोगों में जैनत्व के संस्कार प्रतिष्ठित करना बहुत बड़े महत्व का काम है। हमारी साध्वियां यह काम कर रही है। बिहार –प्रदेश में इसकी बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया हैं खासकर बिहारी जनता को, जो भगवान महावीर की जन्मभूमि ओर बिहार से जुड़ी है, उसे जैन धर्म के प्रति आकृष्ट करना बहुत जरूरी है। मेरे अनेक स्वप्नों में यह भी एक स्वप्न है, सप्रयत्न ऐसा करना चाहिए। अपने श्रावकों को तो संभालना ही है, इन सबके बावजूद स्वास्थ्य की भी उपेक्षा नहीं की जाए।

सोश कुशलम् **आचार्य तुलसी**
12-07-1982 **राणावास**

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारी जी!

बिहार में बहुत अच्छा काम कर रही हैं। शासन की अच्छी प्रभावना बढ़ा रही हैं। शासन का सिंचन करती हैं। बहुत जगह काम किया है। मैंने कहा था– बिहार में बिहारी लोगों को भगवान महावीर के अनुयायी बनाया जाय। मेरे इस विचार को पकड़ा गया। और वहां यह काम शुरू हो गया। सैंकड़ों भाई–बहन भगवान महावीर की वाणी के अनुगामी बने हैं। इसमें साध्वी फूलकुमारी जी का अच्छा प्रयास रहा। अभी उनका वहां रहना होता तो और अच्छा काम होता। वहां के कार्यकर्ता भी इस बात को महत्व दे रहे हैं। यह मेरी अंतः भावना है कि हजारों–हजारों बिहारी जैन बने और महावीर की वाणी को बिहार में गूंजा दें।

29-2-1984 **आचार्य तुलसी**
छापर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारी जी!

बिहार से आई और गुजरात पहुंच गईं और गुजरात में भी सूरत जो हमारे समाज के वरिष्ठ श्रावक मगन भाई का क्षेत्र है। वह भी इस बार आरक्षण आंदोलन के झंझट में आ गया और इस कारण से वातावरण अशान्त रहा, फिर भी हमारी साध्वियां मनोबल के साथ अत्यन्त प्रसन्नता से काम चला रही हैं। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान का शिविर चल रहा है, जिसमें जेठाभाई जैसे व्यक्ति अपना योगदान दे रहे हैं। शिष्या साध्वी फूलकुमारी, जो प्रेक्षाध्यान का अच्छा अभ्यास रखती है, तथा वे स्वयं वहां है एवं उनके सान्निध्य में शिविर हो रहा है, अतः इसकी सफलता में संदेह की गुंजाइश ही क्या है?सभी शिविरार्थी अच्छी साधना करेंगे, ऐसा विश्वास है।

1-08-1985

आचार्य तुलसी
तेरापंथ भवन
आमेट

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी!

तुमने क्षेत्रों की अच्छी यात्रा की। सबको अच्छी तरह संभाला। हमारे धर्मसंघ में अच्छा काम करने वाली साध्वी है। अब कानोड़ चातुर्मास के लिए प्रवेश कर रही है। कानोड़ अच्छा क्षेत्र है। वहां धर्म की प्रभावना हो।

21-06-2000

आचार्य महाप्रज्ञ
लाडनूं

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी!

तुम्हारी जीवन शैली अच्छी रही है। तुम सदा प्रसन्न रहने वाली प्रसन्नता का अभ्यास बनाए रखो। फिर भी किसी अज्ञात कारण से उच्च रक्तचाप की समस्या सामने आई है। डॉ. घोड़ावत से परामर्श कर उच्चरक्तचाप पर नियत्रंण करने वाली एक टेबलेट प्रतिदिन लो और उसके साथ–साथ कायोत्सर्ग का प्रयोग तथा स्वास्थ्य केन्द्र पर ध्यान कर ''वं–वं'' का जप करो। मानसिक शांति के लिए विशुद्धि–केन्द्र पर ''ऊँ–क्षौं–क्षौं'' का दस मिनिट जाप करो।

08-04-2006

आचार्य महाप्रज्ञ
चण्डीगढ़

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी फूलकुमारीजी– लाडनूं–

संयमपर्याय का प्रलम्ब– काल प्राप्त करना एक उपलब्धि है। अच्छा सिंघाड़ा प्रतीत हो रहा है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। स्वाध्याय, जप आदि की साधना चलती रहे। अपने संस्कार व अनुभवों से सहवर्ती साध्वियों को लाभान्वित करती रहे। धर्म–शासन की प्रभावना करती रहें।

10-02-2009

युवाचार्य महाश्रमण
बीदासर

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी!

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आगम स्वाध्याय करती रहें। दीक्षार्थी निर्माण का प्रयास चलें। सहवर्ती साध्वियां खूब अच्छा का करतीं रहें।

30-07-2012

आचार्य महाश्रमण
जसोल

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी!

बिहार क्षेत्र में सघन कार्य कर रही है। आपकी प्रेरणा से फारबिसगंज में अच्छा काम हुआ है। यह काम निरन्तर आगे बढ़ता रहे, इसके लिए स्थानीय लोगों को जागरूक रहने की अपेक्षा है। हमारी साध्वियां सुदूर प्रदेशों में जाकर असाध्य कष्टों को सहते हुए, जिस प्रकार का प्रशंसनीय कार्य किया है, उससे सचमुच हमें गर्व होता है। श्रद्धेय आचार्यप्रवर की कृपा से आगे भी करती रहे। शासन की सेवा करती रहे। ऐसी मंगलकामना है।

04.04.1983

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
अहमदाबाद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी– लाडनूं

आप कई दशकों तक साध्वीश्री खूमांजी के सान्निध्य में रही। वहां आपने पूरी तरह से निश्चिन्त रहकर अपनी साधना और शिक्षा के क्रम को आगे बढ़ाया। निश्चिनतता सदा सर्वदा काम्य है। किसी भी प्रकार का दायित्व प्राप्त होने पर भी जीवन में निश्चिन्तता का अनुभव करना साधना की सही कसौटी है। क्षान्ति, मुक्ति, आर्जव और मार्दव– धर्म के ये चार द्वार है। आप इन दरवाजों में प्रवेश पा चुके हैं अब संकल्प शक्ति का छोटा सा प्रयोग आपके जीवन को धर्म से अनुप्राणित कर सकता है। आप इस दिशा में आगे बढ़े और अपनी सहगामिनी साध्वियों को साथ लेकर बढ़े एवं सफलता का वरण करें।

14-04-1987

साध्वी प्रमुखा कनकनप्रभा
हिसार

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी!

संयम जीवन की षष्ठी पूर्ति का अवसर अध्यात्म के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग लगाने का अवसर है। बहिर्मुखी चेतना को अन्तर्मुखी बनाने का अवसर है। आगम साहित्य के सागर में गहरी डुबकियां लगाकर अध्यात्मरूपी रत्नों को बटोरो और उनसे जीवन को सजाओ। जैन शासन, भैक्षवगण, गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का प्रेरणा–पाथेय मिला है। साठ वर्ष दीक्षा के पूर्ण कर धर्मसंघ की समय, श्रम से आपने बहुत सेवा की। इस दुर्लभतम सुयोग का आपन जागरूकता के साथ लाभ उठाया है। अब तो इनके आधार पर अन्तर्जगत की यात्रा में विशेष प्रगति हो।

इसी मंगलकामना के साथ–

05-10-2003

साध्वी प्रमुखा कनकनप्रभा
सूरत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वी फूलकुमारीजी– लाडनूं

आपने साध्वीश्री खूमांजी की बहुत अच्छी सेवा की है। आप संघीय दृष्टि से अच्छा काम कर रही है। शांत स्वभावी व प्रबुद्ध हैं। सहवर्ती साध्वियों को भी तैयार किया हे। संयम जीवन के सात दशकों की यात्रा में आपने प्रायः निश्चिन्तता और स्वस्थता का जीवन जीया है। इधर से कुछ वर्षों से स्वास्थ्य की अनुकूलता कुछ कम है। फिर भी आप अपने आध्यात्मिक चिन्तन से मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षित रखते हैं। अवस्था के इस मोड़ पर आपका चिन्तन विशेष अन्तर्मुखी बने। समभाव और उपशमभाव आत्मसात हो। आगम स्वाध्याय का विशेष लक्ष्य रहे।

आपकी संयम–यात्रा का 70वां वर्ष अधिक आनंदमय, समाधिमय और मंगलमय हो, यहीं मंगलभावना है।

21-11-2012

साध्वी प्रमुखा कनकनप्रभा
जसोल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शासन श्री साध्वी फूलकुमारी की चातुर्मास तालिका

(अग्रगामी बनने के बाद)

अंक	वि.सं.	चातुर्मास
1.	2038	गुलाबबाग
2.	2039	फारबिसगंज
3.	2040	राजविराज (नेपाल)
4.	2041	ओबरा
5.	2042	सूरत
6.	2043	लाडनूं (चाकरी)
7.	2044	कालांवाली
8.	2045	धूरी
9.	2046	लाडनूं (योगक्षेम वर्ष)
10.	2047	इन्दौर
11.	2048	शाहादा
12.	2049	ग्वालियर
13.	2050	बालोतरा
14.	2051	उधना
15.	2052	नागपुर
16.	2053	जगरावां
17.	2054	पाटण
18.	2055	बीदासर (चाकरी)
19.	2056	भीलवाड़ा
20.	2057	कानोड़
21.	2058	पेटलावद
22.	2059	रतलाम
23.	2060	करवड़

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

24.	2061	जावद
25.	2062	सरदारशहर
26.	2063	लाडनूं (चाकरी)
27.	2064	सादुलपुर
28.	2065	रतनगढ़
29.	2066	कालू
30.	2067	अजमेर
31.	2068	कालू
32.	2069	कालू
33.	2070	कालू
34.	2071	कालू

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन वृत्त

नाम-	साध्वी फूलकुमारीजी
जन्म-	वि.सं. 1986, मिगसर शुक्ला पंचमी
जन्म स्थान-	तेरापंथ राजधानी–लाडनूं
पिता-	स्वर्गीय श्री भूरामल जी बैंगानी
माता-	स्वर्गीया श्रीमती मनोहरी देवी बैंगानी
दीक्षा-	वि.सं. 2000, कार्तिक शुक्ला नवमी, गंगाशहर
दीक्षागुरु-	युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी
शिक्षा-	योग्य, योग्यतर, योग्यतम
गुरुकुलवास-	12 वर्ष
साध्वी खूमांजी के साथ-	25 वर्ष
अग्रगण्या-	वि.सं. 2037, सरदार शहर– मर्यादोत्सव
शासनश्री अलंकरण-	30 जनवरी सन– 2012 आमेट मर्यादोत्सव महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा।
यात्रा-	बंगाल, बिहार, नेपाल, उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान।
प्रमुख कृतियां-	फूलों का पराग, नींव की ईंट : महल की मीनार, रत्न–रश्मि, मातुश्री छोगांजी जीवन वृत्त, उठ जाग रे मुसाफिर, अभ्युदय की पगडण्डियां।
संयम पर्याय-	71 वर्ष / चार महीने / 17 दिन /
संथारा प्रत्याख्यान-	वि.सं. 2071, चैत्र कृष्णा तीज
देवलोक गमन-	वि.सं. 2071 / चैत्र कृष्णा एकादशी

जैन विश्व भारती प्रकाशन
Books are available online at http://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

₹ 40/-